मंत्री, कैमास, चन्द, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करैं क्योंकि दोनों तरह विपत्ति है एक शाह का कोप दूसरे शरण आए को न रखना धर्म विरुद्ध है ॥

दूहा ॥ बोल्लि मंचि कैमास बर, बोल्लि चंद पुंडीर ॥
राव पजून प्रसंग नर, गोयंद रा गुन मीर ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ मेळ मुष देषे न न्टपति, विपति परी दुहु क्रंम ॥
इक सरना इक रग्रहन, इक धर रष्वन भ्रंम ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी सींग पर रक्खा था वैसे ही आप भी कीजिए ॥

गाथा ॥ मनसा धारि विरंचं। दच्छिन पग अंगुरी नषयं ॥
संभू मंन नरिंदं। सत जुगं आदि कीन पैदासं ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १५ ॥ *

कवित्त ॥ संभू मन बरदान। लियौ तप जोर ब्रह्म पच्चि ॥
सरन रष्षि वसुमती। होत कलपंत काल मच्चि ॥
नारद धरन बनाइ। मच्छ रूपं जगदीसं ॥
दस हजार जोजनं। स्रृंग रचि ऊरध सीसं ॥

---

१३ पाठान्तर–मंच। पुंरीर। रा पज्जून। गोइंद ॥
१४ पाठान्तर–यक। रषन ॥
१५ पाठान्तर–* यह रूपक और इसके आगे वाले १६ और १७ रूपक संवत १६४० की प्राचीन पुस्तक में नहीं हैं किन्तु इतर आधुनिक पुस्तकों में हैं ॥
१६ पाठान्तर–रषिं। मछ। अग ॥

करि सत्त नाव निधि पर धरे। अनर्पित जिम गैन धुअ॥
ऐसेक चंद कहि पीथ सम। गरुअ तंन नृप अग्ग हुअ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥ *

जैसे शिवजी गले में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को आप भी रखिए यह चन्द ने कहा॥

दूहा॥ संकर गर विष कंद जिम। बडवा अगनि समंद॥
तै रष्षहु चहुआंन तिम। षां हुसेन कहि चंद॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥*

सुन्दरदास से पूछना कि सब स्त्रियां तो सुख से हैं और शाह से झगड़ा होने की बात क्या सच है?

दूहा॥ मिलिय सु सुंदर दास तचँ। पुच्छिय विधि विधिवत्त॥
कहौ सुंषी चिय सब विवर। विरस साचि सौं सत्त॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

सुन्दरदास का कहना कि हूर की ऐसी एक पातुर शहाबुद्दीन के पास थी उसको लेकर हुसैन यहां चौहान की शरण में आया है॥

दूहा॥ पांच एक सचाव संग। हूर नूर गुन गान।
सै आयौ हुस्सेन द्रुत। सरन तक्कि चहुआंन॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरध्वज के यहां अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने सिंह बन कर मांस मांगा, शरणागता द्रोपदी का चीर बढ़ाया, वैसे ही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की तुम्हारे माता पिता धन्य हैं॥

---

१७ पाठान्तर–तैं। रष्षौं। चहुआंन॥
१८ पाठान्तर–तहां। पुछिय। सुषि। त्रीय। विसर। सौं॥
१९ पाठान्तर–संग। गांन। हुसेन तब। तक्कि। चहुआंन॥

कवित्त ॥ मोरद्धज कै सरन। गयौ दुज होइ सु अर्जुन ॥
सिंह रूप धरि कन्ह। मंस मंग्यौ करि गर्जन ॥
दैंन चीर अरधंग। न्टपति सिर कर वत धार्यौ ॥
देषि महा सतवंत। प्रगट गोविंद उचार्यौ ॥
धनि धंनि मात पित धंनि तुअ। सरनागत ध्रंम तैं रषिय ॥
यिही कहंत कविचंद सौं। संभरि वै निहि सम लषिय ॥ छं० ॥२०॥ रू० ॥२०॥

शाहहुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना॥

दूहा ॥ गयो राज सामंत सम। मिलिग साह हूसैन ॥
आदर न्टप क्निनौ अदब। विवह प्रसंनिय बैनं ॥
छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ २१ ॥

हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जागीर देना।

दूहा ॥ लिये सथ्थ प्रथिराज पहुं। गयौ सुपुर नागौर ॥
धरमायन कारथ†धवल। दिसि दच्छिन दिय ठौर ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को घोड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ भोजन भष्षे विविध वर, बहु आदर विधि कीन।
मान महानम रष्षि रज, राज उभय हय दीन ॥ छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ २३ ॥
दूहा ॥ धरिय डोरि हुस्सेन सिर, है बंधिय हैसाल।

---

२० पाठान्तर-देन। धंनि धंनि। ध्रंम। सों ॥
* यह रूपक हमारी सं० १६४० वाली प्राचीन पुस्तक में नहीं है पर आधुनिक पुस्तकों में है॥
२१ पाठान्तर-नृप। प्रसंनौय ॥
२२ पाठान्तर-सथ। प्रथीराज। पहुं। ध्रंमाइन कायथ। दछिन। दषन। दै ॥
† धर्मायन कायथ=पृथ्वीराज का दरबार मुंशी था। उसका काम है कि जो जो दरबार में आवें उनको उनकी नियत की हुई ठौर पर बैठावे। ऐसा बरताव अभी तक राजपुताने में प्रचलित है ॥
२३ पाठान्तर-भष। मांन। रषि ॥ उभै ॥

अप्प सु चिन्हिय अवर दिन, रज पठ्ठवै रसाल ॥ छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥२४॥

कवित्त ॥ तरकस पंच गिरंत । तीन प्रति षगत तीन सच ॥
षुरासान कंमान । पंच परमान मान जच ॥
गज सु एक सिंघ लीय । सेत तन मद रत्ति वच ॥
गुंजत मधुप कपोल । गज्ज भज्जै प्रेमल सच ॥
हय पंच साजि साकति सुनग । ऐराकी कुल उच्च जिहि ॥
अंमोल वज्र इक लाल दोय । रिंझ समिप्पय राज सहि ॥ छं० ॥२५॥ ॥२५॥

दूहा ॥ राजन रष्षिय सब्ब इह, प्रनवेक प्रति मंत ।
उभै परसपर गंठि परि, संचिय पेम सुमंत ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २६ ॥

शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भेजना ॥

दूहा ॥ च्यारि दूत अजमेर पुर, थिर मुक्केसु विहान ।
आषेटक बन देषि कै, तक्कि गए चहुआन ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को कैंथल, हासी, हिसार का पर्गना देना और शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ॥

कवित्त ॥ आषेटक चहुआंन । पास हुस्सेन संपत्तौ ॥
बार आइ चहुआंन । भाइ घन नाहि दिषत्तौ ॥
नीति राब कुटवाल । तास अह राज सु अप्पिय ॥
*वर कैथल हांसि हिंसार । राजपट्टो दै थप्पिय ॥
इह चरित देषि सब दूत तब । जाइ संपते साहि दर ॥
चरचर चरित जुगिगनी पुरह । कहिय बत्त सें मुष्प धर ॥ छं० ॥२८॥ रू०॥२८

२४ पाठान्तर-धरी । हुसेन । चीन्हे । पठवै ॥
२५ पाठान्तर-तीन । षतंग । षुरासांन । कंमांन । पच परमांन मांन जिहि । सिंघलीय । मद रति । गज । भजे । परिमल । है । उंच जिहि । दुइ । रींज ॥
२६ पाठान्तर-रषिय । घन ।
२७ परठान्तर-षिह । मुके । मुक्कै । विहान । चहुआंन ॥
२८ पाठान्तर-चहुआंन । हुसेन । संपत्तो । आय । -भाइ । दिषंतो । नीतिराज । कुट-बार । * अधिक पाठ है ॥ कैंथल । हांसी । हिंसार । पटो । थपीय । जाय । साहिवर । चवर । चरित । जुगिनी । मुष ॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज के पास भेजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ॥

छंद पद्धरी ॥ संभरिय षब्ब साहाब दीन । उच्चरिय बैन अति कोप कीन ॥
मुक्कलौं दूत चहुआंन पास । कढ्ढौ हुसैन जो जीव आस ॥ छं० २९ ॥
बोलयौ षांन तातार तब्ब ॥ संजाव षांन उमराव सब्ब ॥
पुच्छी सु बत्त किय दूत सार । थप्पी सु बत्त षुरसान बार ॥ छं० ॥ ३० ॥
आरब्ब षेष लीनौ बुलाइ । वैवद्ध वद्ध बुद्धी सुताइ ॥
वंक्षै सुपेम सक लेहिं साहि । लज्जी अनंत आदब्ब थाहि ॥ छं० ॥ ३१ ॥
उच्चर्‍यौ बैन साहाव भास । आरब्ब जाहु चहुआंन पास ॥

अरबखाँ से कहना कि पहिले हुसैन के पास जाना जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ॥

अप्पै जु पात्र हुस्सेन जाम । लैआउ सम्म हुसेन ताम ॥ छं० ॥ ३२ ॥
मुक्कौं सुगुनह कीनौ पसाव । मैं दीन पच्छ करि षिमा दाव ॥
छंडै न पात्र हुस्सेन अब्ब । चहुआंन मिलै सामंत सब्ब ॥ ३३ ॥
जंपियौ बयन चहुआंन साइ । कढ्ढौ हुसेन नागौर थाइ ॥
अज्जीज षांव तुम सच्च उच्च । लिष्यौ सु पत्र हम परम रुच्च ॥ ३४ ॥
कढ्ढौ हुसेन तुम देस अंत । वंछौ जो पेम मानौं सुमंत ॥
रष्यौ हुसेन जो असु परेस । चतुरंग सेन सज्जौं विसेस ॥ छं० ॥ ३५ ॥

---

२९ पाठान्तर–उचरीय । मुकलों । कढो । हुसेन । जौं ॥ २९ ॥ ततार । तब । सब । पुछी । कीय । षुरसांन ॥ ३० ॥ आरब शेष । वद्द वद्दु । वुद्दीय । बछे । पिम्म । लेहिं । बज्जी । आदब । थाह ॥ ३१ ॥ उच्चरयौ । वेंन । आरब । हुसेन । जांम । संम्म । हुसेन । ताम ॥ ३२ ॥ मुक्यो । में । एछ । हुसेन । अब । सब । अब ॥ ३३ ॥ बेंन । सांइ । थाइ । अजीजखांन । सच उच । लिषै । रुच ॥ ३४ ॥ बछो । जो । तु । मांनों । रषो । जो । तो चतुरंग । सजो ॥ ३५ ॥ करो । ॥ ३६ ॥ उचरि । गुंमांन । कहे । मांनों । जाहु । शीघ्र । वांम । करों । निम्रांम ॥ ३७ ॥ सथ । असहनन । नरयान । रथ । आरब । दोय । पष ॥ ३८ ॥

भंजौं सुनैर नागौर देस। जीवंत बंदि बंधौं नरेस ॥
सामंत सूर सब करौं अंत। बंधौ सुबंध सा महनि कंत ॥ छं० ॥ ३६ ॥
उच्चरि गुमान तन बत्त थूल। संषेप कहैं मानौं स भूल ॥
तुम जाउ सिघ्र नागौर धाम। मति करौ एक छिन घर विश्राम ॥ ३७ ॥

तीन सौ सवार और रथ देकर अरब ख़ां को रवाना करना ॥

सै तीन दीन असवार सथ्थ। आरुहन दीन नरयान रथ्थ ॥

एक महिने में अरब ख़ां का नागौर पहुंचना ॥

संचल्यो सेष आरब्ब राह। दो पष्ष पत्त नागौर थाह ॥
छं० ॥ ३८ ॥ रू० ॥ २९ ॥

अरब ख़ां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ॥

दूहा ॥ गय आरब नागौर धर। मिल्यौ साह हूसेन ॥
भोजन भष्य सुभाव किय। विवध प्रसन्निय बैंन ॥
छं० ॥ ३९ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ कही बत्त हूसेन सम। जो कहि साह सहाब ॥
नह मंनिय सामंत हिय। दिय आरब्ब जबाब ॥
छं० ॥ ४० ॥ रू० ॥ ३१ ॥

अरब ख़ां का पृथ्वीराज के पास जाना ॥

दूहा ॥ गयो सेष आरब्ब दर। लही षवर प्रथिराज ॥
बोलि मझ्झ मंडिय महल। सामंतन सब साज ॥
छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ मंझ महल आरब्ब गय। मिलि मंनिय सनमान ॥
दै आसन पुच्छिय कुसल। चाहुआंन सुलतान ॥ छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥३३॥

---

३० पाठान्तर-हुसैन। भष। विबह। प्रसंन्नि। बैंन ॥
३१ पाठान्तर-हुसेन। साहाब। नंह। आरब ॥
३२ पाठान्तर-आरब। षबरि। पृथीराज। मझ। सांमंतां। सम राज ॥
३३ पाठान्तर-आरब। सनमांन। पुछिय। कुशल। चाहुवांन। सुरतान ॥

अरब ख़ां का कहना कि हुसैन ख़ां को निकाल देने के लिये सुलतान ने कहा है ॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चस्यौ बैन आरब्ब सेष। सल्लाम बहुत पति एक षष ॥
कढ्ढौ हुसेन तुम देस अंत। साचाव साचि बंक्षौ सुमंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
जुगमीत अष्षि उबरै न आदि। इस ताउ भाउ बहु बैन सादि ॥
जंपे सु बैन जे कहे साचि। कढ्ढी न बत्त गंभीर भाचि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौंहें चढ़ गईं ॥

संभलिय बत्त प्रथिराज मंत। त्रिकुटी कहर द्रिग रत्त जंत ॥
आरत्त मुष्ष स्रुत श्रोन बुंद। कलमलिय कोप रोमंच त्रिंद ॥ छं० ॥ ४५ ॥

कैमास ने डपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ॥

उच्चस्यौ कोपि कैमास बानि। अतासनि आर्य सिंच्यौ सुजानि ॥
आरब्ब बोल बोल्यौ विहर। सुरतान जानि जंप्यौ गहर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रति बुद्ध लद्धौ प्रथिराज नूर। अतुलित्त जुद्ध सामंत सूर ॥
हुस्सेन आइ प्रथिराज थान। जोधांन भ्रंम षचीय मान ॥ छं० ॥ ४७ ॥

कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहना और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत हैं यह कहना ॥

जंपै सुबैन चहुआंन कन्ह। द्रिग पानि रत्त रोमंच तंन ॥
रज भ्रंम विषम बुझ्झै न साच। अनि राच जेम जंपै बिराच ॥ छं० ॥४८॥
गज्जैं न लज्ज कोपैं म्रगिंद्र। उतक्रिष्ट सूर सिर सचि न निंद्र ॥
गुरु तज्जि जंप्पि गोइंद राज। लग बैन गीर गरु बत्त साज ॥ छं० ॥४९॥
संज्वाल तेज सम तेजे थान। निरभै सुतासु चंपै पयान ॥
उच्चस्यौ चंद पुंडीर कोप। आदीत भाल रस दून ओप ॥ छं० ॥ ५० ॥

गज्जनै कीन केतुक सचाव । गरु अच बत्त जंपै कचाव ॥
हुस्सैन आइ प्रथिराज थान । सरनै सुकीन कढ्ढै नियान ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दल सज्जि सीम चंपै सुसाहि । दल भंजि ग्रहै प्रथिराज ताहि ॥

अरब ख़ां का अपना निरादर होता देख उठ आना और ग़ज़नी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ॥

मानी न सेष आरब्ब बत्त । सामंत सूर देषे विरत्त ॥ छं० ॥ ५२ ॥
आदूरह मंद तजि उठ्यौ सेष । भंभीर बदन द्रिग बहि तेष ॥
पुच्छीय जुगति नृप महल्ल जानि । उठि गर्व दुष्ष मन हीन मानि ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चढि चल्यौ सेष रह साह देस । गज्जनैं गयौ मन मानि रेस ॥
गय महल साहि मिलि कहिय बत्त । सिर धूनि रीस करि नैन रत्त ॥ छं० ॥ ५४ ॥
उठि गयौ साह बह्ल महल्ल । आसंन साजि बैठो सथल्ल ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३४ ।

दर्बार करके शहाबुद्दिन का तातार ख़ां, अरब ख़ां, मीर जमाम, कमाम, खुरासा ख़ां, रहन महन ख़ां, रुस्तम ख़ां, हाजी ख़ां, ग़ाज़ी ख़ां, जम्मन ख़ां, ग़ज़नी ख़ां, मुहब्बत ख़ां, मीर ख़ां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना ॥

कवित्त ॥ सजि आसन साहाब । साह काजी मत बैठौ ॥
बोलि मझ्झ तत्तार । बोलि आरब दिन जेठौ ॥

३४ पाठान्तर–उचस्यौ । वैंन । आरब । शेष । सलाम ॥ ४३ ॥ युगमीत । अथि । उवरें । वैंन : जंपै । कहै । भाष । नांह । ॥ ४४ ॥ तथ्य । तथ । प्रथीराज । भृकटी । आरक्त । मुष्य । धुत्ति । कलि ॥ ४५ ॥ उचस्यौ । बांनि । आरज्य । संच्यौ । जांन । आरब । सुरतांन । जांनि ॥ ४६ ॥ प्रथीराज । अतुलित । युद्ध । हुसेन । थांन । जोधांन । बित्रीय । आंन ॥ ४७ ॥ जंपै । चहुआंन । बुझै ॥ ४८ ॥ गज्जें । कोपिं । मृंगेंद्र । मृगेंद्र । उतकृष्ट । नरिंद्र । तजि । जपि । गोंयंद । बेंन ॥ ४९ ॥ तेजवांन । निरभैं । सतास । पयांन । उचस्यौ । रूप ॥ ५० ॥ गजनैा । केतक । जंपे । हुसेन । प्रथीराज । थांन । कोंन । नियांन ॥ ५१ ॥ सजि । सीस । प्रथीराज । मांनी । आरब । शेष । बिरत्त । शेष । पुछिय । व्रप । जांनि । दुष । मांनि ॥ ५३ ॥ गज्जनैं । मांनि । धुनि । नैंन ॥ ५४ ॥ महल । सुथल ॥ ५५ ॥

मीर जमांम कमांम । षांन षुरसांन न्यान बर ॥
षांन रहंन महंनं । षांन रुस्तंम मद्दा भर ॥
हाजीय षांन गाजीय षां । षांन जमन बंधव सुचिय ॥
गजनीय षांन महुबत्ति षां । मीर षांन सब बोलि लिय ॥ छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

तातार ख़ां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ॥

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब । अहो तत्तार षांन सुनि ॥
जिन सुमत्ति उपज्जै । कहौ सब षांन जानि मन ॥
गौ आरब चहुआंन । फेरि आयौ सु सुनिय सब ॥
सरन रष्षि हुस्सेन । बोलि सामंत राज अब ॥
जंपिय ततार संजो सयन । हनौं राज प्रथिराज रनं ॥
है गै सुबंध बंधौ रिनह । मेरे कि गहि कुहै सुतन ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

खुरासान ख़ां का तातार ख़ां से कहना कि उसके बल को भी विचार लो जल्दी न करो ॥

दूहा ॥ कहै षांन षुरसांन तब । अहो षांन तत्तार ॥
चाहुआंन सामंत बल । चिंति सुविविधि विचार ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

अरब ख़ां का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगों ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥

दूहा ॥ कहै सेष आरब अतुल । बल सामंत नरिंद ॥
अवे न तुम दिष्षिय नयन । सजो सैन चिन बंध ॥ छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

दूहा ॥ कहै साहि आरब्ब तुम । कहौ सूर सामंत ॥
कहा क्रंति प्राक्रम कहा । सत्ति पयं पहुं तंत ॥ छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ ३९ ॥

---

३५ पाठान्तर-बोल । मझ । जिठौ । जमांम । कमांम । षुरसांन । न्यांन । महंनं ॥
३६ पाठान्तर-मति । ऊपजै । जांनि । चहुआंन । स सुनिय । हुसेब । सजौ । हनै । मरैं ॥
३७ पाठान्तर-कहैं । चित्त सुबुद्धि विचार ॥
३८ पाठान्तर-बे । शेष । दिषिय ॥
३९ पाठान्तर-आरब । तुव । क्रांति । सत्य ॥

अरब ख़ां का पृथीराज के बल की प्रशंसा करना ॥

कवित्त ॥ इष्ट मंच उच्चार। दिष्ट उट्ठ चिन इक्क थर ॥
क्रमत पेषि पच्चीस। मिलत सत एक इष्षि पर ॥
सहस सुभर बाहंत। एक सामंत पराक्रम ॥
जामह दुप्पल कटै। ताम बाधंत बीर द्रम ॥
सिर परैं सुचक्कै धर भिरै। परैं श्रोन उट्ठैं सधर ॥
असिधार सूर उट्ठैं किलकि। एह पराक्रम सूर नर ॥ छं० ॥६१॥ रू० ॥४०॥

तातार खां का अरब खां की बात के हँसी में उड़ा देना, अरब ख़ां का कहना कि अपनी आंख से न देखने से ऐसा कहते हो ॥

कवित्त ॥ चल्यौ षान तातार। एम हाजी सम बद्दिय ॥
जय रुनची बिन बषन। मरन भै डरै न कद्दिय ॥
कह्हि आरब तत्तार। अहो सामंत न द्रिष्षिय ॥
अतुल तेज बल अतुल। अतुल बल देव सुरष्षिय ॥
वे साम ध्रंम रत्ते अतुल। अतुल मत्त कैमास भर ॥
उमरा अनंत देषे अनत। अतुल बत्त पहुचै न नर ॥ छं० ॥६२॥ रू० ॥४१॥

शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ॥

दूहा ॥ कहै साहि गोरी गरुअ। अहो षांन तत्तार ॥
कल्हि तरीक सुउंच दिन। चढि अरि सहो सार ॥ छं० ॥६३॥ रू० ॥४२॥

दूहा ॥ उठि गोरी दिन्ने बहुरि। गयौ सु अंदर साह ॥
बहुरि षांन मीरं बरा। अति चंचल तुर ताह ॥ छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

---

४० पाठान्तर-उच्चार। उठ। इक। पच्चीस। इषि। दुपल। तांम। परै। सुहक्कै। उठैं। ऊठैं।
४१ पाठान्तर-तत्तार। बदिय। भय। कट्टिय। काहि। दिषिय। रषिय। सांम। उंमरा। अनंत ॥
४२ पाठान्तर-काल्हि। तेरीक सुं। सधो ॥
४३ पाठान्तर-दिनं ॥

शाह के जी में रात दिन चौहान की चिंता लगी रहना ॥

दूहा ॥ तपै साहि गोरी सुबर । चित सालै चहुआंन ॥
वैरोचन की साष ज्यौं । कीटी भ्रंग प्रमान ॥ छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

अरिल्ल ॥ जग्गत निसि झंषत सुरतानह । घरी सत्त रहि सेष प्रमानह ॥
जगि आयस दिय दीन निसानह । चिंता साहि चढी चहुआनह ॥
छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

सेना के साथ चढ़ाई के लिये शाह का तयार होना ॥

छंदमोतीदांम ॥ भए सुर तीन धुनक निसान । चढ्यौ अश्व सज्जि सिल्है सुरतान ॥
चढे सब षांन सु उम्मर मीर । सजे सहनाइ बजे रस बीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
बजे सब बाज भयानक भाइ । चितें हिय बुद्धि जिनें जत नाइ ॥
चढ्यौ सब सज्जिय सेन गरिष्ट । परो दस दिग्ग सुधूधरि दिष्ट ॥
छं० ॥ ६८ ॥

असकुन होना

सबद्द सियांन सुसेन कपोत । सनंमुष साहि दिष्यौ दल दोत ॥
भयौ दिसि वामिय कग्ग करार । रुक्यौ दिवि धोमय धूम गभार ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सनंमुष देषिय जंबुक सेन । विरो मिलि चंपहि भग्गहि तेन ॥
क्रमें तस उप्पर गिद्ध असंष । चवै सुर रुद्र पसारिय पंष ॥ छं० ॥ ७० ॥

---

४४ पाठान्तर-चहुआंन । भृंग । प्रमांन ॥

४५ पाठान्तर-जगत । जंषत । सुरतांनह । सत्त । रही । प्रमांनह । निसांनह । निसांनह । चहुआंनह ॥

४६ पाठान्तर-मोतीदांम । निसांन । साजि । सिल्हे । सुरतांन ॥ ६७ ॥ सजे । चितें । जिनें । सजिय । गरिट्ठ । दिघ्घ । घुंधरी । दिट्ठ ॥ ६८ ॥ सिंचान । वांमीय ॥ ६९ ॥ ऊपर । पसारीय ॥ ७० ॥ सुरतांन । रहो । कहु । कहैर । आज । गही चल मंनहु चठि सगुंन ॥ ७१ ॥ भयें भये । प्रथीराज । बलु । सामंत ॥ ७२ ॥ हनों । चहुवांन । गहों । मुझ । जुझ ॥ ७३ ॥ चल्यो । सुरतांन । गजिय । निसांन । जलं थल हूअ थलं जल चार । ७४ ॥ लष । समुझिन । सुरतांन । मिलांन २ । चहुवांन ॥ ७५ ॥

अरब खां का कहना कि आज ठहर जाइए शकुन अच्छा नहीं है ॥

गही सुरतान सु आरब बग्ग। रही दिन आज सगुंन न जग्ग ॥
रहै कुछु अज्ज नगार सुदिन्न। गही चढि चल्लहु गन्नि सगुन्न ॥ छं० ॥७१॥

सुलतान का कहना कि काफ़िर चौहान को जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना बिचार करते हो ॥

कहै सुरतान अहो तुम क्रूर। भयें भय म्रित्यु सु झंषहु नूर ॥
कहा बल जुद्ध कहौ प्रथिराज। कितौ बल सामत जुड्डिह साज ॥ छं० ॥७२॥*
हनौं रनु सूर जिके चहुआंन। गहौं जुध राज सु षंडिय प्रान ॥
कहा उर काफर दावहु मुझ्झ। कहा भर आवध आगरि जुझ्झ ॥
छं ॥ ७३ ॥ *

नमंनि चमंकि चल्यौ सुरतान। टमंकिय गज्जिय नद्द निसान ॥
जल थ्थल होय थलं जल भार। अमग्गह मग्ग चलै गहि लार ॥ छं० ॥७४॥
मिल्यौ इक साहन लष्ष समुंद। समुभिम्झन कंन भयो सुर सुंद ॥
चल्यौ सुरतान मिलान मिलान। बढी अति चिंत दुनी चहुआंन ॥
छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ॥

दूहा ॥ गयौ साहि चहुआंन घर। दिए मिलान मिलान ॥
गए सुचर नागौर पुर। कही षबरि सुरतान ॥ छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर सिंध तक शाह के पहुंचने का हाल कहना ॥

कवित्त ॥ सुनिय षबरि प्रथिराज। कहिय जे चरन चरित सह ॥
बोलि मंत्रि कयमास। बोलि चांमुड गुझ्झ गह ॥

---

* यह ७२ और ७३ दो छंद सं० १६४० वाली पुरानी पुस्तक में नहीं किन्तु इतर में हैं ॥
४७ पाठान्तर-चहुवांन। धर। दीए। मिलांन २। सुंवर। सुरतांन ॥

बोलि चंद पुंडीर। बोलि षीची प्रसंग बर॥
बोलि गज्जि गुहिलौत। बोलि का कन्ह नाच नर॥
बोलेति सब्ब सामंत भर। कही बत्त सो कहिय चर॥
सामंत मंत भर सब्ब मिलि। सिंधु सुचंपिय साह घर॥
छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना॥

दूहा ॥ कहत सब्ब सामंत मति। चढि दल सजी समंकि॥
सुनिव मंचि कयमास कहि। करहु निसान टमंकि॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

युद्ध की तयारी होना॥

गाथा ॥ भय टामंक निसानं। पत्तं निज ग्रेह सूर सामंतं॥
बाजे बज्जि अनेकं। हय संगे राज चहुआनं॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ५० ॥

गुरुराम ब्राह्मण का आकर आशिर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना॥

छंद पद्धरी ॥ आये सुनाम गुर राम राज। पढि पच मंच दुज बोलि साज॥
ग्रह नव सुदान विधि विद्व दीन। बेदंत विप्र अभिषेक कीन॥
छं० ॥ ८० ॥

चव सहस हेम दिय विप्र दान। असेष वेद चय साम गान॥
दिय दान भूरि पंषी सु चंड। दीनौ सु अथ्य जिन हथ्य मंडि॥
छं० ॥ ८१ ॥

जै जया जोह जंपी सु आन। मंगल सुसर चव पढ्ढि गान॥
आसिष्य वयन चहुआंन रान। गुरु राम जज्जि आहुत्त प्रान॥
छं० ॥ ८२ ॥

४८ पाठान्तर-प्रथीराज। पुंडीर। कैमास। भुझ्झ। ग्रह। षीचि। गजि। सब। मिल्लि॥
४९ पाठान्तर-सुने। मंच। कैमास। करहु। निसांन॥
५० पाठान्तर-पतै। गेह। सामंता। चहुआंनं॥

दिय तिलक पच पढि वेद मंच । आरोपि कंठ घन मंच जंच ॥
काज दरस वाम चक्कोर आनि । कब्बूत जानि जंपै सु बानि ॥ छं० ॥ ८३ ॥
षंजन सिषंड किय दरसि दिस्स । आदरस दिष्षि किय असिपरस्स ॥
चिंत्यौ सु चित्त जपि उमय कंत । मंग्यौ सु हंस हय तेजवंत ॥ छं० ॥ ८४ ॥
षिची सु जाति जोवंन पूर । षंच्यौ कि मनौं न्टप रथ्थ सूर ॥

भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ॥

साकत्ति सब्ब सज्जी सु बानि । धरि और हेम नृप अग्ग आनि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
चंपै सु चल्यौ न्टप वाम पास । जै जया सद्द आयास भास ॥
चढि चल्यौ बंधि आवद्ध राज । सामंत सब्ब चढि सूक साज ॥ छं० ॥ ८६ ॥
नीसान ताम बज्जे सु घाव । आकास धरा फुट्टे निशाव ॥
संवत्त तीस अद एंच माघ । तेरस्स सेत सुभ जोग साघ ॥ छं० ॥८७॥ *

हुसैन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से आ मिलना ॥

सजि सथ्थ चढयौ हुस्सेन सेन । बंधे स तोन भर मीर ऐन ॥
हुस्सेन सथ्थ मिलि सहस एक । उर सामि भ्रंम बंधें सुनेक ॥ छं० ८८ ॥
प्रथिराज आइ किन्नौ सलाम । आदर अदब्ब दिय राज ताम ॥
मिलि चल्यौ सेन भर तेजवंत । बज्जे सुबज्ज जय हेम वंत ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दस कोस पर डेरा देना ॥

दस कोस जाइ दिन्नौ मेलान । डेरा सुदीन जत्त सुभ्भ थान ॥ छं०॥९०॥रू॥५१॥

---

* इस ५१ रूपक के छंद ८७ के दूसरे पद में इस हुसेन और चित्ररेखा बिषयिक शहाबुद्दिन की चढाई का मुकाबिला करने को जाने का सनन्द अर्थात् पृथ्वीराज का तीसरा शाक ११३५ माघशुक्ला १३ शुभ योग कहा है। यह जैसे कि अबतक इस महा काव्य में आए हुए सब सनन्द अर्थात् प्रचलित बिक्रमी संवत् से आदिपर्व्व के रूपक ३५५। में कहे अंतर वर्ष ९०। ९१ के जोड़ने से मिल जाते हैं वैसे मिल जाता है-११३५+९०। ९१-१२२५। २६ ॥

५१ पाठान्तर-रांम। दांन ॥ ८० ॥ दांन। असेष। सांम गांन। दांन। स चंड। अथ। हथ। जंपय। थांन। पठि। गांन। आशिष। वैंन। चहुवांन। रांम। जन्नि। प्रांन ॥ ८२ ॥ हनमंत। चास। चकोर। आंनि। जांनि। वांनि। दरस्स। दरस। दिस। दिवि। परस। चिंत ॥ ८४ ॥ षंच्यौ सुचि। मनों। रथ। हाकत। सब। सज्जी। वांनी। ओर। आंनि ॥ ८५ ॥ स चळ्यौ। सबद। आउट्ठु। सब। सुक ॥ ८६ ॥ नीसांन। तांम। बज्जे। स्वेत ॥ ८७ ॥ सजि सथ संपत्त हुसेन। सेन। सतोन। एन हुसेन। सथ सांमि। बधें ॥ ८८ ॥ प्रथीराज। आय। कीनो। सलांम। अदब। तांम। बजे। बज्जय ॥ ८९ ॥ कीनो मिलांन। शुभ। थांन। थांनं ॥ ९० ॥

दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ॥

दूहा ॥ देखि चरित न्रप साच चर। गए पास सुरतान ॥
कहैं सेन संमुष रजै। चढि आयौ चहुआंन ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रु ॥ ५२ ॥

सुलतान का चढ़ाई के लिये धूम धाम से चलना ॥

दूहा ॥ सुनि चरित्त साचाव चर। दिय निरघोष निशान ॥
चढ्यौं सेन सज्जे सिलह। करिव फौज सुरतान ॥ छं० ॥ ९२ ॥ रु ५३

सुलतान की चढ़ाई का वर्णन ॥

छंद मोतीदाम ॥ चढ्यौ सुरतान सुसज्जिय फौज। बजे बर बज्जुन बीर अमोज ॥
भयौ गज घुंमर घंट निघोर। मनौं झुकि कंन्न भयौ सुर रोर ॥ छं० ॥ ९३ ॥
गजैं गज मद्द मनौं घन भद्द। चिकार फिकार भए सुर रुद्द ॥
तुरंग मचींस कडक्क लगांम। खरक्किय पष्पर तोन सुतांन ॥ छं० ॥९४॥ *
चमंकत तेज सनाह सनाह। करैं धर पहर राह बिराह ॥
झलक्कत टोप सुटोप उतंग। मनौं रज जोति उद्योत बिहंग ॥ छं० ॥ ९५ ॥
दमंकत तेज कमान कमान। चितं चित मीर रची मद्दमान ॥
भले भर सांइय भ्रंम सगत्ति। लषैं धर जीयन जत्तिन गत्ति ॥ छं० ॥ ९६ ॥
नम निज सांइय पंच बषत्त। सिपारह तीस पढैं दिन रत्त ॥
नमैं निज सेष धरंम सरंम। क्रमैं रह रीति कुरान करंम ॥ छं० ॥ ९७ ॥
दिढंबर बाचरु काछह मीर। तरुंनिय एक रतैं बर बीर ॥
सपद्दय बेध करैं तम तांह। भमंतिय पंषि चनैं छित छांह ॥ छं० ॥ ९८ ॥
धरै टूक एक अनेक सुथानं। झलक्कत मुंड तवल्लह मान ॥
धरैं धर नाच्चिय स्राच्चिय सीस। सिरक्काच्चि बंबर धुंमर दीस ॥ छं० ॥९९॥*

---

५२ पठान्तर–सुरतान। करे। चहुआंनं ॥
५३ पठान्तर–चरित्र। चरित्तं। सहाब। निसांन। सजे। सज्जिह। सुरतांन ॥
*यह पद Caufield Mss. में नहीं है।

अनेक सुवान अनेकव रंग। चढे सब मीरच सेन अभंग॥
अनेक सुवान अनेकय वंन। समुभिझ न चीय समुभिझन कंन॥ छं॰ ॥१००॥
पयं भर अग्ग अनेक सुभार। अनेक सुजाति अनेक सुतार॥
सिरं किय मुंडिय मुंड सुअद्ध। जुवद्दिय उद्दिय जाति अनद्ध॥ छं॰ ॥१०१॥
करं तिय झंडिय रंग अनेक। फुरक्कचि झंपचि झंपच तेग॥
चले घर बान सुसद्धिय दिठ्ठ। अगें चथ नारि अभूल गरिठ्ठ॥ छं॰ ॥ १०२॥
अगें किय मद्द सरक्क सुभार। मनौं पय चल्लत पब्बत चार॥
ढलैं सिर ढाल अनेक सुरंग। फरैं फरचारि उभारिय अंग॥ छं॰ ॥ १०३॥
बरंनच झूंडय मंडय जूव। मनौं घट रित्ति अनंगच रूव॥
भई धुर अंबर अंबर रैंन। जथ्थ थल पद्धरि संक्रमि सेन॥
छं॰ ॥ १०४॥ रू॰ ॥ ५४॥

सारुंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना॥

दूहा॥ जथ्थ तथ्थ संक्रमि सथन। उंच थांन जल थांन॥
दिय सारुंडप अचल पुर। किय मुकाम सुरतान॥ छं॰ ॥ १०५॥ रू॰ ॥५५॥

कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना॥

दूहा॥ घरी सुनव निसि सेष चर। आय पास चहुआंन॥
गये पास कैमास जपि। चरित सब्ब सुरतान॥ छं॰ ॥१०६॥ रू॰ ॥५६॥

---

५४ पाठान्तर—मोत दांम। सुरतान। जुसजिव। बजन। घंटन। कंच॥ ९३॥ गजें। मनों। भद। रवु। रुद्र। सकड कल। बरकिय। पषर। सतांम॥ ९४॥ *यह तुक ए॰ सो॰ की प्रति में नहीं है॥ करें। झलकत। मनों। रजिं॥ ९५॥ कमांन २। मान॥ लषें। जतिन। गति॥ ९६॥ बषते। पठे। रत। नमै। जिंन। कुरांन। तरुनीय। रतें। सबदय। करं। तांह। भ्रमंतिय। धरें। सवांन। झलंकत। तबलह। मांन। धरें दक। धरनाहीय। शीस। कहि। घुंघर॥ ९९॥ बांन। अनेक सु। सेनय मीर। बांन। वृच। समुझि॥ १००॥ हतार। जांनि॥ १०१॥ हठ्ठिय। फरकहि। झंपय। बांन। सधिय॥ १०२॥ मद। सरक। मनों। पग। चलत। पबत। ठले॥ १०३॥ मनो। रित। अनंगय। ढरे। रेणु। सेनु। ॥ १०४॥

५५ पाठान्तर—जथ। थांन। जलथांन। सारुंडे। मुकाम। सुरतांन।

५६ पाठान्तर—निशि। सेवचर। आइ। चहुवांन। सब। सुरतांन॥

अरिल्ल ॥ जगि मंची कैमास मद्दा भर। गंठिय चित्त चरित्त कच्चिय बर ॥
जग्गिय सथ्थ सज्ज निस सेनं। गयो राज यह सज्जि द्रुगेनं ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तयार होना ॥

गाथा ॥ जग्गिय न्टप चहुवानं। कच्चियं कैमास सज्जि सुरतानं ॥
बज्जि निघ्घाय निसानं। सजि बाधं सेन सुरतानं ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

चढ़ाई की तयारी, भगवत् स्मरण तथा दान देना ॥

छंद त्रिभंगी ॥ सयनं सव्वानं, किय सज्जानं, बज्जि निच्चानं, नीसानं।
बंधे सिलहानं, निज निज थानं, पष्षरि पानं, चसगानं ॥
निज किय तं न्हानं, दीन सुदानं, सेष समानं, कुंसानं।
मंने बिप्पानं, चंडी सानं, आसिष्पानं, जंपानं ॥ छं० १०९ ॥
तुलसी तिन मंजरि, चक्र तनं धरि हरिचरनां चरि, जल सारं।
गिलकी सत कंजरि, कृष्ण उरं धरि, साज सबं करि जूझारं ॥
मैाजह हलहं धरि, राग नवं परि, सज्जि बगं तरि, करि ढारं।
मंगै हय राजं, साकति साजं, पष्षरि भाजं सुष राजं ॥ छं० ॥११०॥
हिंदू अंदाजं, तेज मद्दाजं, कीरति काजं, कुल राजं ॥
नामं जा हंसं, उत्तिम बंसं, षुर गिरि जंसं, रजिमंसं ॥
पडु दिय आएसं, सेव नरेसं, कस्सेतं सं, उत्तंसं।
चढ्ढयैा चहुवानं, मंगे जानं, पै बामानं चंपानं ॥ छं० ॥ १११ ॥
चिंते चिंतानं, चित्त सुभानं, जग्ग इसानं ईसानं ॥
छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

---

५७ पाठान्तर—गठीय। गंठीय। कहीय। नेनं। सजि ॥

५८ पाठान्तर—चहुवांनं। सुरतांनं। सज्जी के बोध सेन सुरतांनं। सज्जि के बांध सेन सुरतांनं। सजि के बोध।

५९ पाठान्तर—सवानं। कीय। सजानं। बजि। थांनं। पषरि। चस पांनं। तंन्हानं। ईसानं। इसानं। बिपानं। निजपानं ॥ १०९,॥ तुरसी सिर मंजरि चक्र तनं जरि कर जुग्र अंजुरि हरि चरनं। सल। सिबं। जुझारं। मैाजं। हलं। बगत्तरि। कसि ढारं। है। पषर। मुषराजं ॥ ११० ॥ सदाजं। उतिम। कसैतंमं। उतसं। चढ्यो। चढियो। पैवामनं ॥ १११ ॥ जग। सानं। इसानं ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का सवार होना ॥

कवित्त ॥ चिंतं ईस चहुआन । चल्यौ हय सज्जि सुआवध ॥
बोलि सूर सामंत । बान सज्जे सुबान जुध ॥
जय हर ! जंपे राज । चल्यौ थप्परि दै कंधं ॥
जै मन्निय दै राव । करी कसि मुष ऊरद्धं ॥
धुंदंत धरा पुर पुर विहर । करिय लोह दंतै क्रसक ॥
नाचंत तेन पैरव सुथल । धरनि ध्धंम धुज्जिय धसकि ॥
छं० ॥ ११३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना, मीरहुसैन का अपने साथियों के साथ तयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कवित्त ॥ गयौ राज चहुआंन । साह डेरा हुस्सेनह ॥
सुनी षबरि बर बीर । सज्जि आयौ सथ्थैं सह ॥
करि गोसल्ल पविच । होइ चिंत्ते रहमानं ॥
बंधि सिलह दै मंगि । बीर बज्जे नीसानं ॥
चढि वाह सज्जि सथ्थिय सयन । सीस नम्मि सलांम किय ॥
देषे सुबीर विकसे सुमन । बर सनमान अतिंत किय ॥
छं० ॥ ११४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन ॥

छंद गीता मालची ॥ चढि चल्यौ राजं सेन साजं, बीर बाजं बज्जए ॥
नदं निसानं सजे बानं, गोम गानं गज्जए ॥
फौजें छलक्की बीर बक्की, सूर जक्की जंभरं ॥
बिरदैत बीरं जुद्ध धीरं, आय भीरं धर धरं ॥ छं० ॥ ११५ ॥

६० पाठान्तर-है । सजि । सूद सब्वान । यंन । सबांन । जुद्ध । जे । हय । मंची । उरधं । करिय । दंत लोहं । पयरव । धरनि ताम । धुजिय ॥

६१ पाठान्तर-चहुवांन । हुसेनह । सजि । सथं । चिंत्यौ । बजे । निसांनं । सज । सथी । नांमि । सलांम । सनमांन । अतित ॥

असमंत हासं सांइ आसं, उच्च भासं अज्जरं ॥
लीकं सुबच्छं सुद्ध कच्छं, हूअ गच्छं धीढरं ॥
सजि वानं पथ्थं दंत अथ्थं, राज सथ्थं संभिलं ॥
चल्लै सबल्लं ढाल ढल्लं, गज्ज मल्लं झुझ्झियं ॥ छं० ॥ ११६ ॥
घंटा सुघोरं भेरि रोरं, तयं तोरं सद्दयं ॥
संषं सबद्दं नीर नद्दं, सूर बद्दं बद्दयं ॥
धर पाइ धक्की है धुरक्की, गैग चक्की पष्परं ॥
उड्डी सुरेनं मुंदि गेनं, आइ सेनं सद्धरं ॥ छं० ॥ ११७ ॥
गिद्दी सुतथ्थं चली रुथ्थं, ससि रथ्थं अच्छरं ।
निरषैं सुवीरं निज्ज नीरं, अस्स धीरं मच्छरं ॥
पुट्टै सभीरं बधि सधीरं, साइ भीरं संभरं ।
सेनं सहस्सं तेय दस्सं, झुभ्भ जस्सं धिद्धरं ॥ छं० ॥ ११८ ॥
नारद नद्दं बीर बद्दं, गोम सद्दं तद्दयं ।
सामंत सूरं चढे नूरं, जुद्ध भूरं जद्दयं ॥
सथ्थं सँगारं मंस हारं, ना उचारं जैकरं ।
ओनं सभष्षी भू चरष्षी, षेचरष्षी षेच्चरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

सुलतान के चरों का सुलतान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आगई ॥

दूहा ॥ चरित लष्ष साहाब चर । गए पास सुरतान ॥
सजी सेन सामंत पति । आयो जोजन थान ॥ छं० ॥ १२० ॥ रू० ॥ ६३ ॥

६२ पाठान्तर-बजए । नदं । निसांनं । गजए । हलकी । धकी । जकी । बिरद्दैत । युद्ध । सांइ । धंधरं ॥ ११५ ॥ साइं । उच । अजरं । सुबछं । कछं । गछं । धिठरं । वांना । पथं । अथं । सथं । चढे । सबलं । ढलं । गज । मलं । झुझयं ॥ ११६ ॥ सदयं । बंदयं । धकी । धुरकी । गहकी । पष्परं । उड़ी । सदेने । आय । सधरं । ॥ ११७ ॥ सतथं । सथं । रथं । अछरं । निरष्षै । निरषै । निज । अस । मछरं । पट्टं । साय । सहसं । दुक्षं । झुभ्भ । जसं । द्विद्दुरं ॥ ११८ ॥ नारद । तदयं । तद्दुयं । युध । जदयं । सथं । शांगारं । सैगारं । जैकरं । सभषी । चरषी । पैचरषी ॥ ११९ ॥

६३ पाठान्तर-* सं० १६४७ की में इसका यह पाठ है-मिलि भूचर षेचर सकति । लष । सुरतांन । थांन ॥

सुलतान की सेना की तयारी का वर्णन ॥

छंद विअष्षरी ॥ सुनि चरित्त स'हाब तासचर। बोलि मीर उमराव सहा भर ॥
दिय निरघात घाव नीसानं। चल्यौ सेन सज्जै सव्वानं। छं० ॥ १२०॥
बाजिच वीर अनेक सुबज्जे। धर पडितताध सुगोमह गज्जे ॥
डग्यौ सूर चल्यौ सुरतानं। बज्जि निहाद भाल गिरि वानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
फौज सुपंच सजी साहावं। उलव्यौ सेन समुद्रह आवं ॥
दष्षिन दिसा सज्जि ततारं। दिसि बाँई षुरसान सुधारं ॥
छं० ॥ १२२ ॥
हाजिय रांजिय गाजिय षानं। सनमुष सेन सजी सुरतानं ॥
मीर जमाम षांन कमानं। मद्दबति मीर पुट्ठि सजि नामं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
षान मरुस्तम रुस्तम षानं। मद्धि फौज रज्जे सुरतानं ॥
सहते वीस वीस सजि फौजं। तुंबा पंच रचे अद्दौजं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
चिहुपष्षां गज घूमहि डंमर। हथ्थ नारि गिर बांन असंबर ॥
रिन रन तूर घोर नीसानं। भेरी स्रंग गरुड थन थानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
नफ्फेरी चिय बिध सुर डंडं। जोमष पट्ट वजे घन दंडं ॥
झावत झुझ्झ डहक्क डर्हक्किय। चैबर हींस दरक्क गहक्किय ॥
छं० ॥ १२६ ॥
गज्ज चिक्कार फिकार सबद्दं। तंदुल तबल मृदंग रबद्दं ॥
जंगी वीर गुंडीर अनेकं। बाजिच अनेक गने को बेगं ॥
छं० ॥ १२७ ॥
फौज पंच साजी साहाबं। मीर अनेक गने को नावं ॥
देस देस मिलि भाष अनंतं। तवीयन नाम अनेक गनंतं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

फौजै पंच सजि, चल्यौ जु साचं। गज्जैं धरनि गैंन पुर गाइं ॥
सारुंडै सज्यो दिसि वामं। पद्धर सद्धर उत्तिम ठामं ॥
छं० ॥ १२९ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

सारुँडे के बाईं ओर सजकर सुलतान का खड़ा होना ॥

दूहा ॥ उत्तिम पंथरु पुट्ठि जल। लष्षी जीय सुथान ॥
सारुंडा दिसि वांम दै। सजि ठाढौ सुरतान ॥ छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ६५ ॥
उड्डु रेन डंबर अमर। दिष्यौ सेन चहुआन ॥
सुनिगंकंन वाजिंच चचक। सजे सीस असमान ॥ छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

सुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तय्यार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कवित्त ॥ देखि सेन सुरतांन। नैंन चहुआंन मद्याभर ॥
सज्जि फौज हुस्सेन। सेन सब मीर बीर बर ॥
रूमी षां कंमांम। बेग हुस्सेन समथ्थं ॥
षां दलेल दिषिनीय। जुद्ध करि करै अकथ्थं ॥
कासिम्म षांन करीम षां। षोजा कासिम काज सुष ॥
सिज्ज चै सुसब्ब लिय समथ सजि। करि सलांम किय सीसउध ॥
छं० ॥ १३२ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

६४ पाठान्तर-उमदा। निघात। चल्यौ। सजै ॥ १२० ॥ बजे। गजे। कय्यो। वजित्र ॥ १२१ ॥ समुद्र कि। दषिन। सजि। षुरसांन। सधारं ॥ १२२ ॥ हाजीय। राजीय। गाजीय। सुरतांनं। जमांम। षांन। कमानं। पुठि ॥ १२३ ॥ मधि। रजे। तेर्देस। ढुंबा ॥ १२४ ॥ चिहुं। षां। धुंमर। हय। बांन। असंवरं। रिनतूर। नीसांनं। नफेरी। त्रिविधि। पट। आवध। झुझ। हहक। डहकिय। हय। गहकिय ॥ १२६ ॥ चिकार। फिकार। सघदं। रवदं। गुंडीर। अनंत ॥ १२७ ॥ सजी। मीर अनेक अनेक सनावं। चाष अनेकं। नांम करं सुविबेकं ॥ १२८ ॥ सु। यु। गज्जे। सज्यो। पधर। सधर। ठामं ॥ १२९ ॥
६५ पाठान्तर-उत्तम थलअरु। लषी। थांन। वांम। सुरतांन ॥
६६ पाठान्तर-उडि। मंवर अबर। दिषी। सुने। असमांन ॥
६७ पाठान्तर-सुरतांन नैंन। चहुवांन। सजि। हुसेन। कमाम। हुसेन। समथं। दषनी। करीय। अकथं। कासम्म षांन। षौंजा काश्यप। सब। सथ सजि। किय सलांम। करि सीस ॥

मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा सिर भी आपके लिये तयार है देखिए कैसी लड़ाई लड़ता हूं, पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें ग़ज़नी का सुलतान बनाता हूं॥

कवित्त॥ कहै साह हुस्सेन। सु॰ा चहुआंन जुझ्झ बत॥
आज सीस तुम कज्ज। सेन साहाब षंडौं षत॥
सो कज्जै साहस्स। करिग प्रथिराज सरन भ्रम॥
हौं उज उंसू अज्ज। करौं राजन अकथ क्रम॥
जंपै सु राज प्रथीराज तब। कहा अचिज्ज जंपा तुमह॥
अप्पौं सु कंच गज्जन पुरह। सझ्झि सेन साहाब गह॥
छं॰॥ १३३॥ रू॰॥ ६८॥

मीर हुसैन का सलाम करके बाईं ओर सेना सजना, पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीरहुसैन की सहायता करो और सामंतों का आज्ञा पालन करना॥

कवित्त॥ करि सलाम हुस्सेन। अनी बंधी दिसि बाईं॥
सजरा बंधे कंठ। सहं सज्जे थन थाईं॥
बोलि राज प्रथिराज। बीर जद्दव जामानी॥
महन सीह परिहार। सूर गुज्जर रामानी॥
तीकंम बोलि तारंन भर। बगारीय देवह सुअन॥
मँडलीक बोलि परसंग सुअ। जीहराज जंपै सुगुन॥
छं॰॥ १३४॥ रू॰॥ ६९॥

---

६८ पाठान्तर-हुसेन। झुझ। कज। षंडो। कज्जे। साहस। प्रथीराज। भ्रमं। हैं उज ऊसुं अज। करो। राजंनं। अकथ्यं। अकथ्य। क्रंम। अप्पों॥

६९ पाठान्तर-क्रिय। सलांम हुसेन। सजे। प्रथीराज। जांमांनी। गूजर। रामांनी। तिकंम। सगुन॥

कवित्त ॥ चवै राज चहुआन । तुम सामंत सूर बर ॥
बर कुलीन कुल लज्ज । जुद्ध अन भंग अंग भर ॥
तुम सहाइ हुसेन । सेन सज्जौ दिषि बाईं ॥
तुम अनंत बल तेज । देव बर कंठ सुहाई ॥
साहाब दीन सुरतांन सौं । भिरौं चाल बंधव बिंहसि ॥
मनैं सु बज्जे निज सेन सजि । नाइ सीस रजि बीर रस ॥
छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ७० ॥

कैमास आदि सामंतो का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना सजना ॥

कवित्त ॥ दिसि दच्छिन कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । सिंघ पम्मार भुभ्भक सर ॥
गरुअधाव गहिलौत । निभै पति धार भार घन ॥
तुँवर राइ परिहार । चित्त अनमंग मोट मन ॥
साहस्स चार सज्जे सतन । अनी बंधि दच्छिन नृपति ॥
रत्ताभि वस्त्र रत्ते सुभर । जै मंनी चहुआंन चित ॥
छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के आगे की ओर गोइंदराय आदि सरदारों का पांच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ॥

कवित्त ॥ मड्डि अनी प्रथिराज । अग्ग सज्जे भर सामत ॥
गरुअ राइ गोइंद । राज मंने साहस्स सत ॥
देवराइ बग्गारि । कन्ह चहुआन नाह नर ॥
षीची राइ प्रसंग । बीर कन कूवड गूजर ॥

७० पाठान्तर-चहुवांन । तुम । लज्ज । सहाय । हुसेन । सज्जौं । बांई । सुरतांन । भिरों । बंधवि । विंहसि । नाई सास ॥

७१ पाठान्तर-दछिन । दछिन । राय । पामार । झुझ । गहिलोत । तोंअर । राय । पहार ।

सामंत सूर विकसे सुमन। अरि दल तिर्न मत्तह गनिय॥
छं० ॥ १३७ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

दोनो सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ॥

दूहा ॥ अनी बंधि प्रथिराज न्रप। अनी पंच सुरतानं॥
मिली सेन दूनों निजरि। गज्जे गोम निसान॥
छं० ॥ १३८ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

हुसैन और तातार षां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तातारषां की फौज का भागना ॥

छंद भुजंगी ॥ जगे गोम नीसानं दूवान सेन। धमंकै धरा गान गज्जे सुगेंनं॥
भरं पष्षरं चार ढालैं ढलक्की। घनं सेंन संनाह दूनों चमक्की ॥ छं०॥१३९॥
मिले मीर धीरं छुदिट्ठं दुआनं। पलं एक जीवं उभैं सिंघ जानं॥
दिसा बाइयं साद हुस्सेन अंनी। तिनं मझ्झ सामंत सामंत मंनी ॥ छं० ॥ १४० ॥
भरं जाम जद्दों सुमारू मद्दंनं। षलं गुज्जरं राम मंनै न मंनं॥
सजे सेंन अंनी सहस्सं चियारं। गुरं जुझ्झ भारी सुधारी करारं ॥ छं० ॥ १४१ ॥
सनंमुष्ष तत्तार बीसं सहस्सं। घटा बंधि भद्दों बकैं बीर रस्सं॥
उडी सेन रेनं रुक्यौ रथ्थ सूरं। बकैं दीन दीनं भरं अप्प दूरं ॥ छं० ॥ १४२ ॥
घनं बांन कंमान उड्डै कि जंगं। मनौं जोति षद्योत प्रस्तू निहंगं॥
ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसूरं। महानद्द सद्दं मनौं सिंघ पूरं ॥ छं० ॥ १४३ ॥
बजै धार धारं सुझ्झारं करारं। परैं गज्ज सुंडं ढरैं सूर भारं॥
हकैं हक्क बज्जी सजग्गी सकत्ती। परैं रुंड मुंडं परं श्रोनं रत्ती ॥ छं० ॥ १४४ ॥
मिलैं षांन तत्तार हुस्सेन सेनं। बकैं उंच बाचं सिरं सज्जि गेंनं॥
हयं छंडि कंधं एयं मंडि कन्ने। समं संमुषं दूव सूरं समन्ने ॥ छं० ॥ १४५ ॥
सहस्सं हयं छंडि हूसेन सथ्थं। सयं तीन ताई बियं हिंदु तथ्थं॥

षिति। साहज्ज। सजे। दषिन। रतामि। रते। चहुवांन॥
७२ पाठान्तर-मध। प्रथिराज। षग। संपै। सामंत। राव। चंद चहुआंन। कनकु। सयह। अनीय। समन। मत्तहि॥
७३ पाठान्तर-वधी। प्रथीराज। सुरतांन। दोनुं। गजे। निसांन॥

सथं षांन तत्तार सत्तं सहस्सं । चयं छंडि कांमं रुनं मन्नि गस्सं ॥ छं० ॥ १४६ ॥
भई फौज तीरं दुअं जुद्ध धीरं । दिषै न्रम्मलं निज्ज सामित्त बीरं ॥
उभै डारि ओडं न गज्जै गुमानं । जपैं दीन मीरं सुंनषी कमानं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
बजैं नद्द नीसान भेरी भयंद्दं । गजैं शृंग रीसं मनौं मेघ नद्दं ॥
उभै हथ्थ षेलें सुषग्गं करारं । परैं सुभ्भरं सुभ्भरं फूल धारं ॥ छं० ॥ १४८ ॥
उभै आस जीवं नषा सूर छुट्टी । भरी काल संबान आयं सुघट्टी ॥
करी अप्प ईसं दुईसं दुहाई । मनौं बन्न झुझ्झै गजं मद्दराई ॥ छं० ॥ १४९ ॥
ढरै उत्तमंगं उडै ओन पूरं । मनौं काल पावक्क झालं करूरं ॥
मिले घाइ हुस्सेन तत्तार षानं । जुटे उद्द हथ्थं उभै काल जानं ॥ छं० ॥ १५० ॥
तुटैं आवधं सावधं लग्गि बथ्थं । सुनी कन्न कथ्थन्न दिट्ठी अकथ्थं ॥
जमं दढ्ढ प्राचार छेदं कुलिक्का । उरा पार फुट्टे हवक्कैं कसक्का ॥ छं० ॥ १५१ ॥
कलेवार षेतं ढरं दूअचेतं । उभै सूर झुझ्झै उभै साहि हेतं ॥
भिरैं वान रूमीय षानं दलेलं । परै पाइ सांई हकै सेन पेलं ॥ छं० ॥ १५२ ॥
परे षंड षंडं निजं सामि अग्गै । न को हारि मंनै न को झूझ भग्गै ॥
हकैं जांम जद्दों सुतं सिंघ बीरं । ढरैं आवधं आवधं ढारि धीरं ॥ छं० १५३ ॥
भगी षांन तत्तार अंनी बिहालं । भिरी साहि फौजं टरी गज्जढालं ॥
छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

७४ पौठान्तर-नीसांन । दूबांन । धमंके । गजे । पषरं । ढाले । ढलकी । चमंकी ॥ १३९ ॥ स । दिठं । हुसेन । अंमी । मझ ॥ १४० ॥ जांम । गुजरं । रांम । मंने । सहसं । जुझ ॥ १४१ ॥ सुनंमुष । सहसं । बके । रसं । रथ । बकें ॥ १४२ ॥ बांन । कमान । उडे । मनों । ज्योति । ढलकी । मनों । परें । गज । ढरें । हकें । हक । बजी । सजगी । सकती । परें । ओनं रती ॥ १४४ ॥ मिलें । षांन । ततार । हुसेन । बकें । सजि । दूअ । सूर । मनें ॥ १४५ ॥ सहसं । हुसेन । सथं । तथं । षांन । सहसं । गसं ॥ १४६ ॥ दुयं । युद्ध । द्रिषे । निर्म्मलं । सामित । डंडं । गजे । जषै । कंमानं । ॥ १४७ ॥ नद । नीसांन । गजें । मनों । नदं । हथ । परें । झरं । सुभरं ॥ १४८ ॥ संबांन । मनों । बंन । झूझें । १४९ ॥ ढरें । मनों । पावक । हुसेन । षांनं । जुटैं । इट । हयं ॥ १५० ॥ तुटै । लगि । बथं । सुनी कथ्य कंनेन दिट्ठीं अकथ्यं । प्राहारं । उराफार । फुटैं । हवकें । कसका ॥ १५१ ॥ कलेंवार । ढरें । झूझैं । भिरें । षांन । रूंमीय । षांनं । परे । पाय । हके ॥ १५२ ॥ सांइ । अगें । भगें । जाम । जदैं । ढरें ॥ १५३ ॥ बिहालं । भिली । गज ॥ १५४ ॥

दूहा ॥ रुहस पंच रन मीर परि । साथ सुषांन ततार ॥
परे हुसेंन सुतीन सै । सै दो हिंदू सार ॥ छं० ॥ १५५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

गाथा ॥ नंचिय तीस कमंधं । करि भोरी षांन तत्तारं ॥
दिष्षिय रनतुर बद्दं । भय रसं अदभुत्त भयानं ॥ छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥७६॥
भग्गिय अनी षांन *ततारं । चंपियं जद्दव मघा असवारं ॥
वज्जिय वर नीसानं । सज्जिय जुद्ध हिंदू सवानं ॥
छं० ॥ १५७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

खुरासान ख़ां का आगे बढ़कर लड़ना ॥

छंद चोटक ॥ सजि संमुष षां षुरसान दलं । जग डंबर बंबर ढाल ढलं ॥
बजि भेरि नफेरि भयांन सुरं । घननं किय घुग्घर घंट घुरं ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गजघोर निसानन धुंमरयं । दिग अट्ठ धरा धर धुंमरयं ॥
मिलिवीय अनी दुअ आवधयं भरबंकि उभै षल सात्रधायं ॥ छं०॥१५९॥
झर आवध आवध झाक झरं । कटि मंडल षंडल ढारि ढरं ॥
धरि पेलहिं सेलहिं केस कसं । रस छोड़ भयानक रुद्द रसं ॥ छं० ॥१६०॥
असि षंड विहंडति चैवरयं । गज सुंडह मुंड ढरैं धरयं ॥
धर लुट्टहि जुट्टहि रंधरयं । मिलिवीय अनी दुअ आवधयं ॥ छं० ॥१६१॥
झरयं फिर गिद्धय रोर रुतं । धर श्रोन प्रवाहनि पूर चलं ॥
करि डक्कह डक्कनि बीर नचैं । सिर माल सु ईसर आनि सचै ॥
छं० ॥ १६२ ॥
वर बीर भरैं भर अच्छरियं । सुर रोर सकत्तिय मच्छरियं ॥
हनि हक्कहि षां षुरसान रिनं । द्रिग दिष्षिय चावँड राय तिनं ॥ छं० ॥१६३॥
मिलि आवध सावध दुब्भरयं । हय घाय गुरज्जन सुब्भरयं ॥
कनि चामँड संगिय झारि झरं । जुग फुट्टिय जानु हयं समरं ॥ छं० ॥१६४॥

---

७५ पाठान्तर-हुसेन । सैं । दों । दोइ । हिदू ॥
७६ पाठान्तर-नचीय । कमधं । दिषिय । । बदं । रस अदभूत । भायानं ॥
७७ पाठान्तर-भगीय । *अधिक पाठ इतर पुस्तकों में है और प्राचीन में वह है ही नहीं ॥ तत्तारं । चंपिय । वजीय । सजि । युद्ध । हिंदुसबांनं ॥

सम षां षुरसानं सचाव परं। वच्चि श्रृंगय श्रृंग सन्नर ढरं ॥

दृम षान चयं तजु उप्परयं। बदि जोच दुरी चनि दुप्परयं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

पग छंडिय चामंड राइ रिनं। दिषि राज पुंडीर तज्यौ चयनं ॥

मिलि चंपिय ढारत षांन धरं। तब भग्गिय फौज असुभ्भ परं ॥

छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

खुरासान ख़ां की फौज का भागकर सुलतान की फौज के साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥

दूहा ॥ भगी अनी षुरसान षां। मिलिय जाइ सुरतान ॥

चढ़िय फौज. कैमास तब। सज्जे सिर असमान ॥ छं० ॥ १६७ ॥ रू० ॥७९॥

बाईं ओर से जमान, दाहिनी ओर सें कैमास और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥

गाथा ॥ भोरी षां षुरसानं। परिय मीर रंन सहसेयं ॥

बढ्ढिय जैतसु राजं। भग्गिय सेन देषि सुरतानं ॥ छं० ॥ १६८ ॥ रू० ॥ ८० ॥

दिसि बाईं जामानं। दिसि दाहिनी चंपियं कैमासं ॥

सनमुष चंपिय साजं। जै जै जंपि राइ चहुआनं ॥

छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

युद्ध का वर्णन ॥

छंद नाराच ॥ जयं जयंति जंपियं। चढे सुराज चंपियं ॥

बहंत बांन बानयं। ग्रहंत गोत छानयं ॥ छं० ॥ १७० ॥

---

७८ पाठान्तरः-भ्रमरावली। षुरसांन। भयांन। घनतंक्रय। घुघर ॥ १५८ ॥ घुमरयं। अठ। ढरी ॥ १५९ ॥ पेलहि सेलहि। पेलहिं सेलहिं ॥ १६० ॥ गज्जन। सुडंह ॥ १६१ ॥ फर। डक। डकति। आंनि ॥ १६२ ॥ बीरवरं। अच्छुरियं। सकत्तिय। मच्छरियं। इन। षुरसांन। दिषिय। चावंड ॥ १६३ ॥ आउध। साउध। दुभरयं। गुरजत। सुभ्भरयं। चामुंड। जांनु ॥ १६४ ॥ षुरसांन। साहाव। सुमूर। उपरयं। तुरी। उपरयं ॥ १६५ ॥ चांवंड। चामंड। पुंडोर। बांन। भगिम। असुभ्भ ॥ १६६ ॥

७९ पाठान्तर-षुरसांन। जाय। सुरतान। सजे। असमांन ॥

८० पाठान्तर-गादां। षुरसांनं। रंन। सहसयं। बढिय। जै तस। भगी। गीनी। सेन। सुरतानं ॥

८१ पाठान्तर-बाईं। चंपिय। राय ॥

करी सुफौज एकयं। बहंत नाम तेकयं
बहंत बीर आवधं। करंत बीर सावधं॥ छं०॥ १७१॥
चबक्कि संग संगयं। बहंत अंग अंगयं॥
झटा पटा झमक्कयं। करीअ रीन ठक्कयं॥ छं०॥ १७२॥
समं भरं बगत्तरं। छुवंत षंड षंडरं॥
ढरंत रुंड मुंडयं। कमंत जंत तुंडयं॥ छं०॥ १७३॥
फरं फरंत फेफरं। बुलंत ते डरं डरं॥
कटें सुपाइ रिघंयौ। करंत घात घिंघयौ॥ छं०॥ १७४॥
करंत चक्क चक्कयं। कमंत धक्क धक्कयं॥
ढंत देत दंतरं। अरु अभंत अंतरं॥ छं०॥ १७५॥
झरंत श्रोनयं। बहंत बेग कोनयं॥
झरप्फरंत गिद्धयौ। किलक्किलंत सिद्धयौ॥ छं०॥ १७६॥
नचंत सट्ठि सारियं। करंत बीर मारियं॥
डचक्कि डक्क ईसुरं। घमं घमंत भीसुरं॥ छं०॥ १७७॥
फिकारियंत फेरियं। पलं चरंत रेकियं॥
सपूर श्रोन सक्कती। गुरं सुरंग चक्कती॥ छं०॥ १७८॥
किलं सुकंठ षामयं। मनंत मंनि तामयं॥
कटे सुगज्ज कंधरं। विहंड षंड षंडरं॥ छं०॥ १७९॥
करंत गज्ज चिक्करं। फिरंत सूर फिक्करं॥
किनक्किनंत बाजयं। जमं ग्रहंत साजयं॥ छं०॥ १८०॥
बहंत श्रोन नद्दियं। चलंत सूर सद्दियं॥
धरं गजं द्विकं ठयं? चयं अनेक संठयं॥ छं०॥ १८१॥
तरं सभंडं भालयं। रजंत संगि लालयं॥
धरं परंत मच्छयौ। गजं सु सीस कच्छयौ॥ छं०॥ १८२॥
गजं सुसुंड ग्राहयौ। सुरंजि अप्प चाहयौ॥
रजंत बीर नम्मयं। भयं दपंलि जम्मयं॥ छं०॥ १८३॥
पलं अनंत पंकयं। कुकातरं भयंकरं॥
सुहंत सीस अंबुजं। षटं पदं द्रिगंबुजं॥ छं०॥ १८४॥

कचं सिकार बिथ्थुरं । सुगंधि पंषि कंदुरं ॥
वहंत पूर जोरयं । कंहर सद्द रोरयं ॥ छं० ॥ १८५ ॥

सुतान पंति गोरयं । उचंत वीर सेनयं ॥
अनेक रंग चंमरी । वहंत जीन षंमरी ॥ छं० ॥ १८६ ॥

वही अनेक साकते । कहंत चंद बाकते ॥
अनेक रथ्थ अच्छरं । बरंत सूर सच्छरं ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हजोद कंठ संक्कती । रजंत ओन रक्कती ॥
हहक्क रंत साजयं । झरंत जेम बाजयं * ॥ छं० ॥ १८८ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की बढ़ना, और मंडलीक का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ बाज जेम चहुआनं । झारि सेना झर सुझ्झर ॥
कोउ लत्त केलत्त । गज्ज ढाहे धर सुद्धर ॥
ढेलि अनी दस पेंड । झक्क बाजंती झारी ॥
मारि मीर अनभंग । बिधर जू सेभर सारी ॥
मँडलीक सूर षिझ्झिय सुभर । जुटे षांन सु गज्जनिय ॥
मंडलीक सीस तुट्टैं बिलगि । हन्यौ षांन बिन चंचनिय ॥ छं० ॥ १८९ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥ बिना सीस मंडलीक । हयौ गज्जनीय षांन गुर ॥
अवर मीर च्यालीस । जुझ्झ ढाच भर सुझ्झर ॥
परत सुअन पर संग । बुद रुधिरं नर बुट्ठिय ॥
सुहथ षग्ग सब एक । बीर कारि किलकि सुउट्ठिय ॥

८२ पाठान्तर-छंद लघुनाराच । नराज छंद । बांन । बांनयं ॥ १७० ॥ आउध ॥ १७१ ॥ हबकि । झटकयं । टकयं ॥ १७२ ॥ नरं । बगतरं । हुअंत ॥ १७३ ॥ फर । पाय । सिंघयौ ॥ १७४ ॥ धकधकयं । दंतदंतरं । अरुझरंत । १७५ ॥ भभकयंत । झरफरंत । किलकि ॥ १७६ ॥ सठि चरियं । दियंत । वीर । डहकि । धम ॥ १७७ ॥ फेक्रियं । संपूर । सक्की । हकती ॥ १७८ ॥ क्रामयं । गज ॥ १७९ ॥ गज । चिकरं । फिकरं । किर्नकनंत ॥ १८० ॥ *अदीयं । सदीयं । धरं गठं । विकठयं । सठय ॥ १८१ ॥ मछयो । ससीस । कछयो ॥ १८२ ॥ किगजंसु । षांहियो । किरंजि । श्रय । चाहयो । रजंत मीर निम्मयं ॥ १८३ ॥ सुभंत शीश । दिगं ॥ १८४ ॥ बिथुरं । कंठरं । कसूर ॥ १८५ ॥ गोगयं । बीर रोमयं । जाम संमदी ॥ १८६ ॥ रथ । अछर । सछरं ॥ १८७ ॥ सकतीं । रकती । हहक । रंज १ १८८ ॥ * यह तुक ए० सि० की प्रति में नहीं है ।

८३ पाठान्तर-चहुआंन । सुभर । केउलत केलत । गज । वाजंती ढारी । मारि मार । मंडलीक । षिझिय । पीजिय । गजनीय । मंडलीक । शीश तुट्टे । विन सीस नीय ॥

रत्तरे गात उत्तंग तन । उद्ध रोम झारंत असि ॥
गचि दंत दंति धरि पुंक चय । डड्डि सुनंचिय बीर हँसि ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ८४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भरकि सेन साहाब । डररि भगो चय गय नर ॥
घरिय एक विती । बिहुर अड्डे अघास चर ॥
दिष्षि दिष्ट साहाब । राइ चामंड बीर बर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । जाम जद्दौं भर सुभ्भर ॥
कैमास दिष्टि दिष्यौ समर । क्रमे च्यारि गहनं सुबचि ॥
आए सुबीर अड्डे अकसि । रन रस आवध रीठ मचि ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ॥

छंद विज्जुमाला ॥ मचिय मत्त आवद्द रीठ । भर चरि दैंन सुभ्भर पीठ ॥
चक्कैं सूर अग्गर सार । धर धर परैं तुट्टिय धार ॥ छं० ॥ १९२ ॥
जंपैं उभै दीन जु आंन । जुभ्भिझय मत्त मत्तिय पांन ॥
बह बचह काच कै चाक । बज्जै विषम आवध झाक ॥ छं० ॥ १९३ ॥
परि लर थरैं उट्ठैं एक । तम्मी उकसि झारैं नेक ॥
षह षही आवध सार । बाचै बीर बारं बार ॥ छं० ॥ १९४ ॥
अंन्यो अन्य सद्दैं नाम । आवध ग्रद्दैं अप्पन ताम ॥
हंहं करैं दुष्ट सँभारि । उट्ठैं विरद धारी भारि ॥ छं० ॥ १९५ ॥
अदैभुत्त बीर भैयान । मंचिय कंक विषम कपान ॥
नर बर बरय हँसैं रँभान । उट्ठिय नेह ग्रेहति जानि ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

८४ पाठान्तर-मंडलीक । भुम्म ठाढे भर सुभर । बुट्ठिय । उठिय । रतरे । उतंग । उध उहि । हंसि ॥

८५ पाठान्तर-घरीय । बिहुर । अडे । आय सुहर भर । अयासु । दिषि । राय चामुंड । जांम । जद्दौ । सुभर । गहन । सुमीर । अडे । दिन ॥

तुट्टिय सेन पल तिष तीर। इन परि जुद्ध जुट्टिय धीर॥
तरैं सांई उप्पर भत्य। सेवक उद्ध सांई कित्ति॥ छं०॥ १९७॥
चौसठि क्रंम लोथि पथार। भर परि धरच लुभ्भिय चार॥
उप्पर भिरैं सामंत सूर। मत्तौ जुद्ध दून करूर॥ छं०॥ १९८॥
ठेलैं एक एकं बीर। गज्जै दीन जंपै मीर॥
चावंड राव जट्टा जामि। माह्र मचन गूजर राम॥ छं०॥ १९९॥
गोविंद राव विकसिय भाल। मानौं कोपियंते काल॥
आंवरि बीर च्यारौं बीर। धारैं षग्ग दीकर धीर॥ छं०॥ २००॥
हक्कैं बीर जंपै बांनि। जुट्टे इसं केहरि जानि॥
चंपै मीर तुट्टैं भार। नंचैं कमध अठ्ठ उभ्भार॥ छं०॥ २०१॥
भग्गैं परैं के अगिवांन। बढी जैत राव बहुआंन॥
सतै सहस लुथ्थिय भार। परि रन मीर धीर पथार॥ छं०॥ २०२॥ रू०॥ ८६॥

पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना॥

कवित्त॥ परे मरि पथ्थार। साह हंक्यौ रा * चावंड॥
संमुह गोरी चंपि। मनौं गज सौं गज आमंड॥
चंद्र सेन पुंडीर। आइ सज्यौ दिसि षामं॥
क्रमि सनमुष कैमास। हक्कि जद्दव राजामं॥
पुंडीर राइ चामंड भर। गहे दून दूनौं सुक्रर॥
चै चल्यौ जांम जद्दव उभ्भर। मिलि चिहु चंपियं षंड भर॥
छं०॥ २०३॥ रू०॥ ८७॥

८६ पाठान्तर-छंद उधोर। मंत। मट्ठु। दैंन। सुभर। हकें। अगर। परें॥ १९२॥ लुवांन। षह षह रुक हक्कें हाक॥ १९३॥ षरें। उठि। तमि। झारें। षट षट्टि। षट्टि॥ १९४॥ सदैं। नांम। षहे। अप्पने। तांम। हहं। द्रष्ट। संभारि। उठें॥ १९५॥ अदभुत्त। तदभूत्त। भैयांन। मचि। कंकम। क्रमांन। रंभान। उंछिय। जांनि॥ १९६॥ तुटिय। तरें॥ सांइं। उप्प। ऊपर। भृत्त। सांइ। क्रत्त॥ १९७॥ लुथि। लुभिय। भिरें। सामंत। दुनों॥ १९८॥ एकें। गजे। चावंह। जांम। गुजरा। रांम॥ १९९॥ गोइंद राय। गोविंदराव। गोइदराइ। विकसि। मानों। कोपीयंते। आंवरि। धाइं। धारे। षग॥ २००॥ हकें। बांनि। इम। जांनि। चंपे। तुट्टें। कमंध॥ २०१॥ भग्गे। परें। अगिवांन। जैतरा। वहुवांन॥ सते। लोथीय। लुथिय॥ २०२॥
८७ पाठान्तर:-पथ्थर। हक्यौ। * अधिक पाठ है॥ गोरी। मनों। क्रमि सनमुष पुंडीर। मंत्रि जद्दव राजामं॥ राथ। रावँ। गहे। जांम। चंपियं॥

सुलतान का पकड़ा जाना, उसकी सेना का भागना, और पृथ्वीराज की विजय॥

कवित्त॥ गह्यौ षंचि सुरतान। डारि अड्डौ है चामंड॥
भगी सेन बेहाल। परे घन थान थान रुड॥
ग्रहन अग्र सुरतान। परे षां न्याजी गाजी॥
मीर मान कम्मांन। पर्यौ आरब अरि भाजी॥
को गनै षान मीर रु अवर। सहस सत्त तुट्टे सुधर॥
नच्चै कमंध च्यालीस रस। जै लभ्भी चहुआंन भर॥

छं०॥ २०४॥ रू०॥ ८८॥

दूहा॥ मंडलीक षीची पर्यौ। तीकम त्यार सुबंध॥
राम धाम पंमार परि। नचि सामंत कमंध॥

छं०॥ २०५॥ रू०॥ ८९॥

सूर्योदय से एक घड़ी पांच पल पर लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे सुलतान पकड़ा गया, बीस हज़ार मीर और सात हज़ार हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे, तीन कोस में लड़ाई हुई, सुलतान को अपने डेरे में लाए॥

कवित्त॥ घरी एक पल पंच। सूर उगत सज्ज्यौ जुध॥
घरी च्यारि दिन सेष। ग्रह्यौ सुरतान पान उध॥
सहस बीस इक व्रन्न। परे रनमीर समथ्थं॥
सहस्स सत्त हैगे। समुह षंडे धर तथ्थं॥
सय तेर परे हिंदू सयन। कोस तीन रन अद्ध परि॥
सुरतान गहिय चहुआन पहु। आयौ बज्जत बज्ज घर॥

छं०॥ २०६॥ रू०॥ ९०॥

८८ पाठान्तरः-सुरतांन। अड्डो। हैं। चामंडं। थांन थांन। सुरतांन। मांन। कमान। भागी। षांन। सु। तुट्टें। सधर। नंचं। लभी। चहुआंन॥

८९ पाठान्तर-दोहरा। रांम। वाम॥

९० पाठान्तर-उग्गत। गहचौ। सुरतांन। पांनि। षांन। व्रच। समथं। सहस। समूह। षंडे। तथं। परें। सुरतान। चहुवांन॥

रणक्षेत्र में ढूंढ़कर पृथ्वीराज का मीरहुसैन की लाश निकलवाना ॥

दूहा ॥ षेत ढुंढि प्रथिराज न्रप । बजे जीत रन तूर ॥
षां हुसेन घन घाय घट । उप्पारिग बर सूर ॥

छं० ॥ २०७ ॥ रू० ॥ ९१ ॥

पातुरि का जीतेजी हुसैन के साथ क़ब्र में गड़जाना

दूहा ॥ पन्यौ हुसेन सुपाच सुनि । चिंतिय चित्त दूमांन ॥
सजौं घोर हुस्सेन सथ । करौं प्रवेस अपांन ॥

छं० ॥ २०८ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन के पांच दिन आदर के साथ रखकर, तीन बेर सलाम कराके मीरहुसैन के बेटे ग़ाज़ी को उसको सैांपकर यह प्रण कराके कि अब हिन्दुओं पर न चढूंगा, छोड़ना, शाह का ग़ाज़ी को लेकर कुशल से ग़ज़नी पहुंचना ॥

कवित्त ॥ रष्षि पंच दिन साहि । अदब आदर बहु किन्नौ ॥
सुअ हुसेन गाजी सुपूत्त हथ्थैं ग्रहि दिन्नौ ॥
किय सलांम तिय वार । जाहु अप्पने सुथांनह ॥
मंति हिंदू पर साहि । सज्जि आऔ स्वथानह ॥
बैठाइ साह सुष्षासनह । लाय अप्प गाजी सुसथ ॥
संपत्त जाइ गज्जन पुरह । करी षैर उद्धार अथ ॥

छं० ॥ २०९ ॥ रू० ॥ ९३ ॥

---

९१ पाठान्तर-प्रथीराज । उपारिग ॥
९२ पाठान्तर-दमांन । सजौं । हुसेन । करों । अपान ॥
९३ पाठान्तर-सुपुत्त । हथें । दिंनौ । सलांम । बेर । सजि । आयो । सथांनह । वैठाय ।

अमीरों का सुलतान के जीते जगते लौटने पर बधाई देना और कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ और बधाई ऊंमरा। करी आइ सुरतांन ॥
 अंन्य सबन कीनी षबर। पुजिय पीर ठटांन ॥ छं० ॥ २१० ॥ रू० ॥ ९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हुसेन षां चित्ररेखा पात्र अधिकारे पातिसाह ग्रहन नाम नवम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ९ ॥

सुषासर्नाह। लीय। मथ। जाय। गजनपुरह ॥
 ९४ पाठान्तर–उमरिनि। उमरनि। आय। सुरतांन। अंन्य। पुजीय ॥

उपसंहारणी टिप्पणी।

यह पर्व्व वा समय हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं की बादशाहत के तो नाश होने और मुसलमानी के स्थापित होने के सत्य मूल कारण को ज्ञात करानेवाला है तथा यह वह कारण है कि जिसको सब मुसलमानी तारीखों ने जान बूझकर छिपाया है। इस ही से इस में लिखे वृत्तादि का मुसलमानी तारीखों में मिलना कठिन हो रहा है। चंद कवि यह न लिख गया होता तो हमको इस समय वह ही ज्ञात होता कि जो मुसलमानी तारीखों में लिखा मिलता है। यद्यपि चंद पृथ्वीराज और हिन्दुओं का पक्षपाती कहा जा सकता है तथापि उसने मुसलमानों की भांति विपक्ष के वृत्तों को बिल्कुल छिपाया नहीं है किन्तु उनकी अपेक्षा उसने कुछ सविस्तर लिखा है कि जिनमें से अन्य बातों को छोड़कर ऐतिहासिक अंश हम पृथक् कर सकते हैं। जिस हुसैन की कथा का यह समय है वह कौन था? इस का स्पष्ट पता मुसलमानी तारीखवाले नहीं देते हैं, किन्तु यूरोपियन विद्वानों ने उसका पता लगाने में बड़ा परिश्रम किया है। जब कि मुख्य पुरुष का पता लगाने में इतनी कठिनता है तब अन्य योद्धादि के जो नामादि इसमें आये हैं उनका पता लगना कितना कठिन है। इस विषय में बहुत कुछ लिखने की अपेक्षा हम डाक्टर होर्नली साहब की एक ऐसा नोट नीचे प्रकाशित करते हैं कि जिस से इस हुसैन का पता और चंद का उसको शाहाबुद्दीन का बांधव बताना सत्य ज्ञात हो जाय। उक्त डाक्टर साहब का लिखना यह है

195. Hussena Khána (Husain Khán) appears to have been a son of the Mir Husain, who as related in Canto 8, was the primary cause of the invasions of India by Shahab-ud-din. Mir Husain or, as he is variously called Sháh Hussain or Husain Khán is there said to have been a cousin (bandhava) of Shahab-ud-din, a distinguished warrior, living at the Sháh's Court at Ghazni. The Sháh had a beautiful mistress, named Chitrarekhá, to the story of whom the 10th Canto is devoted. She was fifteen years old and very skilful in music, and was greatly beloved by the Sháh. Husin fell in love with her and she with him. One morning the Sháh sent for him and upbraided him on his conduct. But Husain continued to intrigue with Chitrarekhá, and was forced to leave the city. He carried off his family and property and Chitrarekhá, and fled to Prithiraj to Nagor. Prithiráj, after some hesitation, welcomed him and gave him asylum. Hearing of this, Shahab-ud-din was furious and sent messengers to demand Chitrarekhá from Husain; failing in which, they were to demand the expulsion of Husain from Prithiraj. Husain refused to send the woman back, and Prithiraj replied, he could not give up the man who came to him for refuge. Shahab-ud-din receiving this answer, at once prepared to invade India; Prithiraj, on his part also prepared for war. In the battle that ensued, Husain distinguished himself greatly, but lost his life Chamand Rae succeeded in capturing the Sháh, and thus the battle was decided in favor of Prithiraj. After five days the Sháh was released and allowed to return to Ghazni taking Ghazi, Husain's son, with him, and pledging himself no more to make war upon the Hindús. The pledge, it need hardly be said, was not kept by the Sháh, and the implacable hatred, which these events had created in his mind was never appeased till it was slacked in the blood of Prithiraj and the destruction of his Empire. The capture of the Sháh, here related, is the first of the seven times, he is said to have become the captive of Prithiraj. The next occasion of his capture is referred to in note 187; once more he is made captive as related in the present Canto. Chitrarekhá is said to have buried herself with the corpse of Husain. If the Husain Khán mentioned here, is the son of the elder Husain, who was taken to Ghazni by

Shahab-ud-din, he must have made his escape afterwards and returned to Prithiraj. The elder Husain is undoubtedly the same as Nasir-ud-din Husain, who is repeatedly mentioned in the Tabaqat-i-Nasiri (Major Raverty's translation, pp. 344, 361, 364, 365). He was the older of the two sons of Malik Shihab-ud-din, Muhammad, a younger brother of Sultán Bahú-ud-din Sām, the father of Sultán Shahab-ud-din. The elder Husain, therefore, was as Chand correctly states, a cousin (bandhava) of the latter. In the Tabaqat, it is true, it is said that Nasir-ud-din Hussain usurped the throne of his uncle Ala-ud-din during the latter's temporary captivity at the Court of Sultán Sanjar of Khorasan, and that he was murdered by his uncle's partisans on the latter's return from captivity (p. 364). But firstly, this story is contradicted by all other Muhammadan historians, who pass at once from Ala-ud-din to his son (see Major Raverty's foot-note, p. 364). Secondly, it is more probable that if there was any usurpation at all, it was made by Nasir-ud-din's father Muhammad, the younger brother of Ala-ud-din. The three brothers Saif-ud-din Súri, Baha-ud-din Sām, and Ala-ud-din Husain, succeeded each other on the throne of Ghor; it is natural, therefore, that during Ala-ud-din's captivity, the fourth brother Shiháb-ud-din Muhammad, should have occupied or attempted to occupy the throne. The writer of the Tabaqat must have confused father and son, as he has done also on other occasions (e. g., with regard to Ziya-ud-din Muhammad). Thirdly the description of Nasir-ud-din Husain's character: "he had a great passion for women and virgins, and had taken a number of the handmaids and slave girls of the Sultán's harem" (Tabaqat p. 364), agrees with Chand's story about his intrigue with Chitrarekhá and has evidently a confused recollection of it. There can, therefore, be little doubt, that Chand gives substantially the true account of Husain's fortunes. It may be added, that both the Tabaqat and other Muhammadan histories give a rather confused relation of an ancestor of this Husain (and of the Ghori royal family generally) who also bore the name of Husain or Hasan, having fled to India, and having lived some time at Delhi (see Tabaqat pp. 322, 323, 332). There is perhaps in this a confused recollection of the flight of Husain to Prithiraj, related by Chand."

अभी हमने इस कथा के नायक हुसैन का ही पता अपने पाठकों को बतलाया है किन्तु अन्य जितने योद्धाओं के नाम इस में आये हैं उनका हम पता मुसलमानी तारीखों में लगा रहे हैं और अन्य विद्वानों से भी उनके विषय में निश्चय कर रहे हैं, अतएव उनके विषय में फिर निवेदन करेंगे। अभी तो हमारा इतना ही काम है कि इस महाकाव्य को इतना शोध कर प्रकाशित करावें कि विद्वान इतिहास वेत्ता उसे अवलोकन कर सकें, इत्यलम्॥

अथ आषेटक चूक वर्णनं लिष्यते ॥
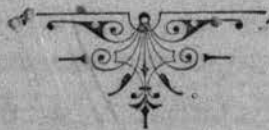
(दसवां समय)

एक बर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ॥

दोहा ॥ बरष एक बीते कलह¹ । रीस रष्षि सुरतान ॥
उर अंतर अग्गी जलै । चित सल्लै चहुवान ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

एक महीना पांच दिन गज़नी में रह कर फिर हुसैन का पृथ्वीराज के पास आप जाना ॥

दूहा ॥ मास एक दिन पंच रहि । बढ़ि धाइ हुसेन * ॥
पग लग्गौ चौहान कै । राज प्रसन्निय बैन ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

फिर पृथ्वीराज का आषेटक माड़ना और शहाबुद्दीन का चूक करने को आना ॥

दूहा ॥ फिरि आषेटक मंडि नृप । षट्टू बन घन तास ॥
दूत साहि साहाबदीं । आइ संपत्ते पास ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

---

१ पाठान्तर-बीते । सकल । रषि । सुरतांन । अंदुर । अगी । साले । चहुआंन ।

२ पाठान्तर-बधि । बंधि । धाय । घाइ । घाव । हुसेन । लग्यौं । चौहांन । बेंन ॥

* यहां "हुसेन" से कवि का अभिप्राय हुसेन कथा नामक समय के चित्ररेखा को लानेवाले हुसेन के बेटे ग़ाज़ी हुसेन से है कि जिसको पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को हाथ पकड़ाकर ग़ज़नी भेज दिया था (हुसेन कथा रूपक ९३) परंतु शाह ने ग़ज़नी पहुंचकर उसे भी क़ैद कर दिया था सो वह जेल में कत्ल करके पीछे, फिर १ महिने और ५ दिन वहां रह कर पृथ्वीराज की शरण में आ गया ॥

३ पाठान्तर-षट्टू । इस । दी । आय । संपत्ते ॥

नीतिराव खत्रिय का शहाबुद्दी को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना॥

कवित्त॥ नीतिराव षत्रीय†। चरित ग्रेहं चहुआनं॥
दिल्ली को वर भेद। लिषे कग्गद सुविहानं॥
वरष उभै षट मास। करै सुविहान पलान्यौ॥
षट्टू बन घन राज। बीर आषेटक जान्यौ॥
सामंत सूर सथ्थंन को। बर वीरं तन षेलइय॥
दैवान जुद्ध चुहुआन भर। भिरि दुरजन भर ठिल्लइय॥ छं०॥ ४॥ रू०॥ ४॥

आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढाई करो॥

दूहा॥ इक तप पंग नरिंद कौ। अरु * सुनि अवाज सुरतान॥
आषेटक प्रथिराज गय। षट्टवन चहुआन॥ छं०॥ ५॥ रू०॥ ५॥

कवित्त॥ आषेटक बन तक्कि। दूत गज्जनैं सपत्ते॥
साह जेर साहाब। दिए पुरमान निरत्ते॥
ससम, चय गय मुक्कि। राज षट्टू बन पिल्लै॥
सामंत कै सथ्थ। भुझ्झ गुज्जर दिसि मिल्लै॥
निकस्यौ द्रव्य साहाब दिय। बर नागौरं ग्रेह धन॥
इह घात साहि गोरी सुबर। करौ चूक कै सज्ज रन॥ छं०॥ ६॥ रू०॥ ६॥

---

४ पाठान्तर-येहं। चहुवांनं। कग्गर। कोपि सु। बिहांन। पलांन्यो। षटु। जांन्यो। सथह। सथां। कीं। को। षेलईय। दीवांन। दैवानं। चहुआंन। दुजन। ठिलइय। ठिलईय॥

† नीतिराव षत्रिय नामक मुख़बिर था कि जो पृथ्वीराज के यहां की खबरें शहाबुद्दीन को दिया करता था। वाह यह कैसा देशहितैषी पुरुष था!!!

५ पाठान्तर-कों * अधिक पाठ है॥ सुरतांन। पृथ्वीराज। षटू। चहुवांन॥ † यह रूपक सं· १६४० की प्रति में नहीं है॥

६ पाठान्तर- गजनै। संपत्ते। दीए। फुरमांन। षटू। पिले। सय। भुझ्झ। गुजर। मिले। द्रव। दी। नागौर। सजि॥

हाजी ख़ां आदि का तयारी करना ॥

चौपाई ॥ आषेटक षट्टू चहुवानं । कहै पूत से मुष सुविचानं ॥
हाज़ी षां गष्षर मुकनाजी । मंझौ चूक महंमद गाजी ॥
छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥

कवित्त ॥ सें बुझ्झै सुरत्तान । दूत पच्छिम सुबिचानं ॥
आवेटक प्रथिराज । सथ्थ कित्तक चहुआनं ॥
तुम राजन निर्मान । राज बिब्बेक परष्षै ॥
तुम * स्वामी ध्रंम हग स्वामि । स्वामि द्रोही तन लष्षै ॥
जंगली न्रपति जंपहु चरित । कुल बल मंत सु किज्जियै ॥
तत्तार षांन षुरसान षां ॥ हिंदू भेद सुलिज्जियै ॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ भेद दुग्ग भंजियै । भेद दुज्जन दल भंजै ॥
राजभेद बंधियै । भेद देवन ग्रह रंजै ॥
मंच सोइ जिन भेद । भेद बिन मतो न होई ॥
भेद बंध बल सोइ । भेद देषै सब कोई ॥
संग्रहो भेद चहुआन को । मुष उचार जो जंपियै ॥
तत्तारषांन षुरसान षां । बलहन दुज्जन चंपियै ॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिए चौहानों का जीतना कठिन हैं ॥

कवित्त ॥ चहुआन जम वान । गेनं सुक्कनें सुकुट्टै ॥
कुटिल दिष्ट जिहिं फिरै । तेज अरियन दल षुट्टै ॥

८ पाठान्तर—बुझैं । सुरतांन । सें बुझै साहाब । साह पछिम सुरतांनं ॥ प्रथीराज । सथ क्तिक । केतक । चहुवांनं । बिबेक । परषैा । * अधिक पाठ है ॥ स्वांमि । द्रग । स्वांमि । सामि । नह । लषैं । ततार । षुरसांन ॥

९ पाठान्तर—द्रुग । भांजीयै । दुजन । बंधीयै । ग्रह । सोई । सोय । देषो । चहुवांन । जंपीयै । ततार । षुरसांनै । दुजन । चंपीयै ।

प्रबल तेज अस छेज। जुद्ध दैवान देव ग्राति ॥
एक लष्य लेषियै। एक लषियै लष्यन भति
इह जानि चूक चिंत्यौ न्रपति। इहै बत्त सुविहान कौं ॥
तत्तार षांन निसुरत्त षां। पूछि षांन षुरसान कौं ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ षां षुरसान ततार। षांन अरदास समप्पिय ॥
चूक मंडि सुरतान। थान चहुआन सुथप्पिय ॥
हाजी षां गाजी सु। बंध निज बंधी गष्षर ॥
सुब्बिहान साहाब। साहि सोरं दल पष्षर ॥
निज षान षान षुरसान पति। हथ्थ साहि बल बधियै ॥
मिलि मीर मसूरति तत्त किय। चूक साहि अरि संधियै ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

पृथ्वीराज का वेखटके आनन्द से आषेट खेलना ॥

दूहा ॥ रंग रमै राजान वन। नहीं संक मन मांहि ॥
तरु बेली घन गह बरिय। सुभि जल निरमल छांह ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सतह पंच दीपीय। एण फंदैत पंच सै ॥
सहस स्वान दस डोरि। अहै पंचान पंच सै ॥
पंच अग्ग पंचास। कहू चाव दिसि सज्जे ॥
कुही बाज उत्तंग। पंष आघात सुबज्जे ॥

---

१० पाठान्तर-चाहुआंन। जमआंन। सुकतैं। जह। लष। लेषीये। एक लेषियै। जांनि। चिंत्यों। इहैं। विहांन। ततार। निसुरत। पुछि। षुरसांन। कों ॥
११ पाठान्तर-षुरसांन। सुरतांन। थांन। चहुआंन। संबंध। सबंध। निबंधी। गषर। सुबिहांन। बिहांन। पषर। षांन। षांन। षुरसांन। बंधीये। अर। संधीये ॥
१२ पाठान्तर-राजांन। लुर। बरीय। निर्मल ॥

षरगोस सिंह पंजर गुहा । धनुष धनंविय धार घन ॥
प्रथिराज राज मंडै रवनि । आषेटक षट्टू सु बन ॥
कं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ १३ ॥

आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का षट्टूबन में छिपकर पहुंचना ॥

कवित्त ॥ षां ततार षुरसांन । षांन हाजी षां गाजी ॥
गष्षर पष्षर साह । मीर महमद षां बाजी ॥
अष्ट सहस असवार । तुंग तिय अग्ग बनाइय ॥
पेसकसी पतिसाह । कूर पर पंचन आइय ॥
सेनाह सज्जि अंदर सिलह । नह प्रिषै जामें रचह ॥
करि चूक आइ षट्टू बनह । प्रथीराज चहुआन जहं ॥
कं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

सवेरे के समय चढ़ाई करने का विचार करना ॥

कवित्त ॥ दस अराक ताजीय । पंच षुरसान कमानं ॥
तक्यौ साहि गज्जनै । चिंति षट्टू चहुवानं ॥
छल सज्यौ बल हारि । घात नर घात निहानं ॥
लग्यौ चंपि सुरतान । वैर हुस्सेनह षानं ॥
सुविहान आन चहुआन सौं । लै फुरमान समान धरि ॥
सुविहांन हिंदु पुज्जै नहीं । जमन जोर बल बहुत करि ॥
कं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १५ ॥

---

१३ पाठान्तर-तहांस । रुग । एन । अंच । करु । चावंदिसि । संजे । उत्तंग । वजे । सीह । प्रथीराज । मंडे । वरन । षटू । स ॥

१४ पाठान्तर-षुरसांन । षांन । गषर । पषर । गाजी । सन्यह । सजि। नहिं । पिष्षै। रचह । चहुआंन । जह ॥

१५ पाठान्तर-अैराक । षुरसांन । कमांनं । षटू । चहुआनं । निआनं । सुरतांन । हुसेन सु षांनं । विहांन । आंन । चहुवांन । सों । फुरमांन । बिहांन । पुज्जे । नही । जवन । जोर ॥

पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वरीज का निकलना ॥

कवित्त ॥ आषेटक संभरिय। राज मेलान न आइय ॥
हस्सम हय गय मुक्कि। तक्कि षट्टू बन धाइय ॥
के हंका के हक्कि। तत्थ पक्खिवानह लग्गा ॥
सत्थ पंच सामंत। न्रप चहुआन विलग्गा ॥
पंमार सलष अलषह बलिय। चाहुआन रघुवंस जिम ॥
हंध्यौ नरिंद चालुक्क सम। सिंघ विंटि वाराह जिम ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥

कवि चन्द का कहना कि हमें शहाबुद्दीन के आने का सन्देह है और खोज करने पर चारों ओर यवनों को पाना ॥

कवित्त ॥ करि विंटिय चहुआन। पिप्र सब सस्त्र समाहिय ॥
सुब्बिहान फुरमान। बंचि कविचंद सुनाइय ॥
सुबर जोर साहाब। साह से देस सुरंगा ॥
तोन कमान प्रमान। दए दस हथ्थ तुरंगा ॥
छिन एक छिमा छिम रष्षकें। चावद्दिसि न्रप विंटयौ ॥
तन तोन भारि संमुह भए। राज अदब्ब सुमिंटियौ ॥
छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥

शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना ॥

कवित्त ॥ चंपि लहद्दिय हथ्थ। जमन ठट्टे चावद्दिसि ॥
चूक चिंत चहुवान। कन्ह कढ्ढी सु बंक असि ॥
हाजी षान गष्षर नरिंद *। षंति षग षोलि विहथ्थं ॥
तेग भार विभार। सलष घल्ली गल बथ्थं ॥

१६ पाठान्तर-आईय। हसम। तकि। षटू। धाईय। तथ। पषिवांनह। लगा। सथ। चहुवांन। बिलगा। चाहुवांन। चाहुआंनि। रुध्यौ। चालुक। वींटि ॥

१७ पाठान्तर-वंटिय। चहुआंन। सु विहांन। फुरमांन। बिंचि। साह संदेस सुरंगा। तोंन। कमांन। प्रमांन। हय। छिमाछिम पकरिकें। चावद्दिसि। वीटयौ। अदब। मिंटयौ ॥

घरि अद्द अह बीभूच्छ भय। जग्गि भयानक वीर सम ॥
दुहुलोच कढ्ढि परि थार नें। सूक चिंति कुथ्यौ विषम ॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

युद्धारम्भ युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ धरं धार कढ्ढी। घनं बीज बढ्ढी ॥ रसं रोस थट्टी। मुषं मुंक अट्टी ॥ छं० ॥ १९ ॥
परे पट्ट पट्टी। मनौं मद्द जट्टो ॥ उनं तेग कढ्ढी। जनौं वज्र टट्टी ॥ छं० ॥ २० ॥
जमं दढ्ढ दट्टी। मनौं नोन अट्टी ॥ उक्कट्टे उक्कट्टी। घनं घट्ट घट्टी ॥ छं० ॥ २१ ॥
कुलालं उलट्टी। उतारंत मट्टी ॥ रटें मार मारं। सुरं आसुरारं ॥ छं० ॥ २२ ॥
परं ते पथारं। कुठारं करारं ॥ बुले घाव तारं। किनारं उघारं ॥ छं० ॥ २३ ॥
हूसै जुद्ध आरं। मंची कूह कारं ॥ षप्यो पंच भारं। ....
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ १९ ॥

पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारों ओर हो जाना और इन सभों का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ॥

कवित्त ॥ पंचानन भै पंच। स्वामि ओडन थत्त रष्षे ॥
इक्क स्वामि रन अग्ग। इक्क उभ्भे दस पिष्षे ॥
सार धार प्राचार। बीय तिय उप्पर बाहै ॥
मनौं तत्त घरियार। मेघ जल बुट्ठ प्रवाहै ॥
दनु देन जष्ष गंधव्व जय। गन हय गय उच्चार हुअ ॥
सुरतान सेन झुकि मांहि परि। धनि नरिंद सोमेस सुअ ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २० ॥

१८ पाठान्तर–हय। यवन। ठठे। वावदिसि। चिंति चहुवांन। षां। गवर। * अधिक पाठ है ॥ विहयं। विभार। घला। बयं। वीभक्ष। भयांनक। दुहुल्लाह। कंठि। ते ॥

१९ पाठान्तर–छंद रसावला। धर धारं कटी। बटी। घटी। मुक्ष। अटी ॥ १९ ॥ परें चटपटी। मद जटी। कढी। तटी ॥ २० ॥ दढ वढी। लोन अटी। उक्कठी। घट घटी ॥ २१ ॥ झलालं। उलटी। मटी। आसुरारं ॥ २२ ॥ घाव ॥ २३ ॥ पस्यौं। युद्ध ॥ २४ ॥

२० पाठान्तर– भैं। डंडनु। रषं। एक। रिन। एक उभे। पषं। तीय। उपर। तत। बुद्धि। जरक। गंध्रव। गांन। उचार। सुरतांन ॥

पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ॥

कवित्त ॥ चाहुआन कमान। पंच लीने सुपंच सर ॥
बष्पर पष्पर सौ पलान। असु ढ्यौ मीर धर ॥
दूजै बान तकंत। तक्कि भंज्यौ षां गोरी ॥
तीजै बान तकंत। साहि भंजी बिय जोरी ॥
कंमान बान चवहथ्थ भिरि। षिजि किरवान विरान कढ़ि ॥
कटि बीर अंग फरकं पखर। रह्यौ नट्ट कुट बसं चढि ॥

छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ॥

कवित्त ॥ षां गाजी चहुआन। दिष्ट मरदां दो उट्ठी ॥
दंग लग्गि जनु अग्ग। घ्रत्त घाग हर बुट्ठी ॥
दूनों हथ्थ उतंग। तेग कड्ढी दुहु बंकी ॥
मनु घन घटा मझार। बीज कुंडली झलंकी ॥
चहुआन तुच्छ ढक्कुर बहिय। ढुरिग मीर बिय सिरढस्यौ ॥
जांनेकि वज्र वज्री सुपति। गिरनि छेद हथ्थह धस्यो ॥

छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ २२ ॥

सुलतानी की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ॥

अरिल्ल ॥ सुबर सेन संमुष सुरतानं। घेन वच्छ परि जन करि जानं ॥
सत्त पंच परि उप्पर पंचं। तुञ्यौ सार धार करि रंचं ॥

छं० ॥ २८ ॥ रू० २३ ॥

चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ॥

कवित्त ॥ जूह मंत संमूह। कूह आषेटक बज्जिय ॥
बर चालुक्कं नरिंगे। चंपि चावद्दिस गज्जिय ॥

---

२१ पाठान्तर कमान। पंचि। सपंच। बषर पषर। पलांन। धय्यौ। बांन। तक्कि। बांन। कंमांन। बांन। हथ। किरवांन। विरांन। भ्रुटि। फरक्कुप्प रह। नट ॥

२२ पाठान्तर-चहुआंन। दिष्टि। दों। उठिय। अगि। घ्रत। बुठिय। हथ। दुहुं बंकिय। मनों। झलकिय। चहुआंन। तुछ। ढठ। ढरिग। गमीर बीय शिर। सिरठु। ढुय्यौ जांने। हयह॥

२३ पाठान्तर-बछ। ज्यंनं। सत। उपर। करिं ॥

छंडि आन पक्खिवान। हंकि सैंधव भुकि धाइय ॥
गही सेन सुरतान। तेज बाजी जस धाइय ॥
विम्भाय धाय तन झंझरिय। तुटि पंजर वर धुक्किधर ॥
कटि घाइ लष्ष पंचौ प्रगट। उड़ि हंसव संमान सर ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ २४ ॥

कवित्त ॥ सोलंकी सिर मौर। रेह अनहल पुर रष्षी ॥
दोऊं दीन पष्षर प्रमांन *। कित्ति दुअ पष्पच भष्षी ॥
धूप दीप साषा * सुगंध। रंभ रानी मिलि गावै ॥
नाग पती सुर वधू। केलि करि कलस वँदावै ॥
लग्गौ भरंम द्रिगपाल धर। जंस भरम जग्गे सुभर ॥
कविचंद भरन चालुक्क कै। मच्चौ न.को रबि. चक्कतर ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ २५ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ॥

कवित्त ॥ सुधर जुद्ध अवरुद्ध। जुद्ध कटि सिद्ध समानं ॥
मार मार उच्चार। तेग कढ्ढी चहुआनं ॥
तुटि सिषर उर फुट्टि। बीर अद्धो अध भुल्लै ॥
मानुं तुला की डंडि। बीर बानावलि तुल्लै ॥
आषेट भग्गि एकठ्ठ हुअ। सबै सेन प्रथिराज जुरि ॥
बाजिद षान गष्षर गहर। वांम कोद्द उभ्भै उसरि ॥
छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ २६ ॥

२४ पाठान्तर-जूहं मत। चालुक। दिसि। थांन। पछिवांन। सेंधव। धाईय। सुरतांन। घाईय। धाइ। झझरिय। लष। उड्डि। समांन ॥

२५ पाठान्तर-रष्षिय। दोउ। पषर। * अधिक पाठ है ॥ किति दुअ दीनह भषिय। * अधिक पाठ है ॥ बंदावै। भरंम। द्रिगपाल। चालुक। रथतर ॥

२६ पाठान्तर-युद्ध। युध्ध। उकार। चहुवांनं। त्रुटि। सिष्षर। धर भुलै। मनौं। दंड। बांनाधली। तुलै। एकठ। प्रथीराज। बाजिद षांन गषर। बांम। उभै। उचरि ॥

सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी घोर युद्ध होना ॥

कवित्त ॥ रुप्पौ सेन सुरतान । राज चढि नंषि सुरंगं ॥
कै तिमर भग्ग तपभांन । सिंह हक्कै कि कुरंगं ॥
तब * रुप्पौ राव सिंघरिय । लाज सुविहान षटक्किय ॥
सस्त्र तेज बल बंधि । सेन चहुआंन हटक्किय ॥
है घरिय टोप उप्पर बह्यौ । सार तिनंगा तारयौ ॥
जानें कि तिंदु दारुन जरै । जैत षंभ पर झारयो ॥

छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हय मुक्कौ सिरदार दुहु । देखि भयौ न्रप चूक ॥
घरी एक भंरि सार बहु । ज्यों अगि संजुत्ता ऊक ॥

छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २८ ॥

यवन सरदारों का माराजाना, पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जुरे सिरदार । राउ रंघव बाजी दह ॥
पालि बथ्थ गल हथ्थ । बहु भंजिय रग गूदह ॥
ज्यों मुष्टिक चानूर । कन्ह भंजिय अप्पारह ॥
उत्तमंग लै हूर । सूर अपछर उप्पारह ॥
बाजीद षांन भोरी धरिय । धाउ पंच रंघर न्रपति ॥
रष्षै जु सांइ मिट्टै कवन । निमष मांहि उतपति षपति ॥

छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २९ ॥

हारकर शहाबुद्दीन का ग़ज़नी की ओर लौट जाना ॥

दूहा ॥ चूक चूक भय असुर सुर । फिरि गज्जन दिसि षांन ॥
हारि जुआरी ज्यों चलै । कर घट्टे कर जान ॥

छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ ३० ॥

२७ पाठान्तर-सुरतांन । बाजि चढि । भांन । हक्कै । * अधिक पाठ है । रिघरिय । विहांन । चहुआंन । हटक्किय । घरीय । जानें ॥

२८ पाठान्तर-दुहुं । अगनि । उक ॥

२९ पाठान्तर-युद्ध । जुरै । सिरहार । रांव । बाजींदह । बथ । गर । हथ । रंग । अषारह । उपारह । बजींद । घांउ । घाव । यु । सांरं ॥

३० पाठान्तर-गजन । षांन । युवारी । चले । घटे । जांन ॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जै कार करना ॥

दूहा ॥ जीति राज चहुवांन वन । आषेटक असुरान ॥
　　जै जै जै कविचंद कहि । चंद सूर बष्यान ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके राजा मद्रुबन आषेटक रन सुरतांन चूक करनं नाम दसम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥

३१ पाठान्तर-चहुवांन । असुरांन । वषांन ॥

उपसंहारणी टिप्पणी ।

यह समय भी हमारे स्वदेशी इतिहास के लिये बहुत उपयोगी हैं। क्योंकि एक लड़ाई तो "हुसैन कथा" नामक समय में रासो के अनन्द संवत् अर्थात्, पृथ्वीराज के तृतीय साक ११३५ माघ शुक्ल १३=११३५+९० । ९१=१२२५ । २६ वर्त्तमान विक्रमी में आगे हो चुकी थी और दूसरी उसके एक बरस पीछे यह "आखेटक चूक" नामक हुई है। इस लड़ाई के होने का समय कवि ने स्पष्ट न बताकर प्रथम रूपक में–बरष एक बीते कलह–से पहिली के एक वर्ष पीछे इसका होना वर्णन किया है अर्थात् पहिली के सं० ११३५+९०।९१=१२२५।२६ में एक जोड़ने से ११३५+१=११३६+९० । ९१=१२२६ । २७ वर्त्तमान विक्रमी होता है। वैसे ही "अखेटक" शब्द के नियत समय के अर्थ से "फाल्गुण" मास का होना भी प्रकाश किया है। प्राचीन समय में हमारे देशी राज्यों में वर्ष भर के अनेक त्यौहारों में फाल्गुण मास में जिस दिन ज्योतिषी आखेट का महूर्त्त देते थे उस दिन एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता था। इसीसे यहां कवि ने "आखेटक" शब्द से फाल्गुन का संकेत अर्थ में माना है। अब यह त्यौहार लुप्त सा होता चला जाता है, तथापि वह प्राचीन राज्य उदयपुर में इस समय तक भी माना जाता है और उसको वहां "अहेरिया" वा "महूरत का शिकार" करके कहते हैं। और उसका सविस्तर वृत्तान्त कर्नैल टोड साहब ने अपने परम प्रसिद्ध ग्रंथ "राज स्थान" में यह लिखा है॥

"The merry month of Phalgun is ushered in with the Ahairea, or spring-hunt. The preceeding day the Rana distributes to all his chiefs and servants either a dress of green, or some portion thereof, in which all appear habited on the morrow, whenever the astrologer has fixed the hour for sallying forth to slay the boar to Gouri, the Ceres of the Rajpoots: the Ahairea is therefore called the *Mahoorut ca sikar* or the chase fixed astrologically. As their success on this occasion is ominous of future good, no means are neglected to secure it, either by scouts previously discovering the lair, or the desperate efforts of the hunters to slay the boar when roused. With the sovereign and his sons all the chiefs sally forth, each on his best steed, and all animated by the desire to surpass each other in acts of prowess and dexterity. It is very rare that in some one of the passes or recesses of the valley the hog is not found; the spot is then surrounded by the hunters, whose vociferations soon start the *dhokra* and frequently a drove of hogs. Then each cavalier impels his steed, and with lance or sword, regardless of rock, ravine, or tree, presses on the bristly foe, whose knowledge of the country is of no avail when thus circumvented, and the ground soon reeks with gore, in which not unfrequently is mixed that of horse or rider. On the last occasion, there occurred fewer casualties than usual, though the Chandawut Hamira, whom we nicknamed the "Red Riever," had his leg broken, and the second son of Sheodan Singh, a near relation of the Rana, had his neighbour's lance driven through his arm. The young chief of Saloombara was amongt the distinguished of this day's sport. It would appal even an English fox-hunter to see the Rajpoots driving their steeds at full speed, bounding like the antelope over every barrier, the thick jungle covert, or rocky steep bare of soil or vegetation." with their lances balanced in the air, or leaning on the saddle bow slashing at the boar".

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 435.

और उन्होंने इस वृत्तान्त में के "अहेरिया" शब्द पर जो टिप्पणी दी है उसमें पृथ्वीराज जी के इस आखेटक के विषय में यह कहा है–

"In his delight for this diversion, the Rajpoot evinces his Scythic propensity. The grand hunts of the last Chohan emperor often led him into warfare, for Prithiraj was a poacher of the first magnitude, and one of his battles with the Tartars was while engaged in field sports on the Ravi."

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 485.

यद्यपि. रूपक ४ के वाक्य–वरष उभै षटमास–का अर्थ दो वर्ष और छ महिनों का भी हो सकता है, परन्तु प्रथम रूपक के वाक्य–वरष एक बीते कलह–की उस के साथ संगति मिलाने से उस का अर्थ एक वर्ष का ही होता है अर्थात्, वर्ष अर्थात् दो छमाही। सो पाठक विचार देखें ॥

जैसे "हुसैन कथा" वाली रासो की संवत् ११३५ की लड़ाई का कारण हुसैन और चित्ररेखा का पृथ्वीराज के शरण आना था; वैसेही इस आखेटक चूक की लड़ाई का कारण उनके बेटे ग़ाज़ी हुसैन का रूपक २ के अनुसार एक महिने और पांच दिन पीछे फिर पृथ्वीराज जी के पास चला आना है ॥

तथा रूपक ४ एक अपूर्व्व वृत्त प्रकाशित करता है कि हमारे एक हिन्दू–नितिराव खत्रीय–दिल्ली में बिराजे हुए हिन्दुओं की बादशाहत नाश करवाने को पृथ्वीराज जी के यहां की मुख़बरी शहाबुद्दीन को लिखा पढ़ा करते थे। ऐसे जीव भी धन्य हैं !!!

अथ चित्ररेषा समयौ लिष्यते ॥

(ग्यारहवां समय ।)

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ॥

दूहा ॥ पुच्छि चंद बरदाइ नैं । चित्तरेष उतपत्ति ॥
षां हुसेन षावास कहि । जिम लीनी असपत्ति ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥ *

शहाबुद्दीन के विक्रम का वर्णन ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस अवदेस । साहि पल्लांन कुसब्बं ॥
बदक खामि भेहरा । छंडि गष्पर छिति आबं ॥
जल जोवन साहाब । दीन दुरँगे करि गिन्निय ॥
हिंदंवान मेछान । थान थानह करि लिन्निय
बजि विषम बाइ सुरतान ष्यन । साहि बदीं सब दीन पति ॥
अनसंक कंक मनु संकपति । जनु जोवन तन रविन पति ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शहाबुद्दीन का अरब ख़ां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कवित्त ॥ दिसि आरब सुरतांन । दिष्टि आलोकि बंक सुअ ॥
आकंपे दिसि उच्छि । अचल चालंत चित्त दुअ ॥
सज्जि सेन चतुरंग । जंग अनभंग विचारिय ॥
बोलि षान षुरसान । षान जित्ते अधिकारिय ॥

---

१ पाठान्तर-पुछि । बरदाईनें । उतपति । लीनिय । असपति ॥ * इस समय में कवि ने हुसेन षां के कहे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेखा को प्राप्त किया था सो वर्णन किया है ॥

२ पाठान्तर-पलानि ।, पलांन । कसंबि । बदकर । सांमि । दुरंगे । गिन्नीय । गिनिय । हिंदवांन । मेछांन । थांनै । लिंनीय । सुरतांन । सहाबदी । मनौं । जन । जर ॥

मारूफ षान तत्तार षां । षान षान सेरिन सुबर ॥
काली बलाइ कलहंत रिन । बोलि बीर पच्छे सुनर ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

अरब ख़ां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ॥

दूहा ॥ * आरब पति अर सिंध तट । विन सलाम सुरतान ॥
तिन उप्पर सज्जिय सयन । कहर छंडि फुरमांन । छं० ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त ॥ सत्त पंच वारुन्न विसाल * । लष्य दुइ तुरी लषिन्ना ॥
आरब्बी दे पंच । लष्य इक सोधि सुलिन्ना ॥
काबिली उर तेज । रोम रोमी पंजाबी ॥
लोहानी जल बान । सेष गोरी आरब्बी ॥
लष एक लष्य लष्षां मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥
चालंत कटक गोरी प्रबल । भूमी चाली पंचनिय ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ चली पंषिनी सथ्य चौसठ्ठ थानं । चली अग्ग पंती सुदंती प्रमानं ॥
तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । .... छं० ॥ ६ ॥
धजा पंति फैरंत भादव्व भारं । भबक्कैं मनौं सूर संगी कि सारं ।
बजै चंग चंबाल गज्जै कहरं । बज्जैं तह सद्दं पपीहं ददूरं ॥ छं० ॥ ७ ॥
धरं बंक यौरि उद्धौर घंटं । बरं दैर भंजै धरै षिच दहं ॥
अगें चल्लियं अग्गिवानं समीरं । तिनं पुठ्ठ षुरसान षां बंधि भीरं ॥ छं० ॥ ८ ॥

३ पाठान्तर-दिसि वर आरद साह । दिष्ट । सुर । डुलि । सजि । विचारिय । षांन । पुरसांन । षांन । जिते । अधिकारीए । मारुफ । षांन । ततार । षांन षांन । रन । बलाय । पछैं ॥

४ पाठान्तर-सिंद्ध । नट । सलांम । सुरतांन । उपर । सजिय । फुरमांन ॥ * अरब खाँ नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिंधु तट पर के देश का पति था कि जिसके पास चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर-सत । बाहन । * अधिक पाठ है । लष । दोइ । लषीना । आरबी । पांच सें । लष । लीनां । कबिली । बांन । शेष । गैारी । आरबी । षष । लषां । मुहां । पारेवाह । षंलिय । गौरी । पंषनीय ॥

धरै क्रच सीसं विराजंत गोरी। षिल्लै पंति देवं विचं किद्ध छोरी॥
बकीथान थानं कुटें मा पट्टं। जगी जोग जालं उलट्टै सुथट्ट॥ छं०॥ ९॥
चलै आरबं उप्परे साजि सज्जी। कमट्ठं पिठं उथ्थलं सेस दज्जी॥
बिंटे गढ़ चिहुचार केथान थानं। मनौं सागरं बीच बड्डानलानं॥ छं०॥ १०॥
बजे थान थानं सु चंबाल दूरं। गहे षग्ग मीरं बदै मुष्ष कूरं॥

शाह का निसुरति ख़ां को अरब ख़ां के पास भेजना कि चित्ररेषा को देकर पैर पर गिरै तो हम क्षमा करदें॥

बरं मोकले मेलनि ह्नुत्ति षांनं। कहौ आरबं लग्गि पायं विहानं॥ छं०॥ ११॥
दियौ चित्तरेषा लियौ दंड दानं। भिरै षेत औसौं कहै काज कानं॥
षम्यौ तापना आरबं निठ्ठ निठ्ठं। गयौ कादरं धीरजं दिठ्ठ दिठ्ठं॥ छं०॥ १२॥

अरब ख़ां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेषा को देना स्वीकार करना॥

दियौ जाइ फुर्मान निस्सुत्त ईसं। लियौ आरबं आदरं नाइ सीसं॥
दई चित्तरेषा सिताबी सुडोरं। तिनं उप्परं गुंज भौंरान कोरं॥ छं०॥ १३॥
इकं सेत हथ्थी दु आरबं अराकी। पलंगी रजक्की धरें अंत पाकी॥
सतं एक सष्षी दई चित्तरेषा। बनी सुद्ध बानै छरं मद्धि नेषा॥
छं०॥ १४॥ रू०॥ ६॥

६ पाठान्तर-सथ। चौसठि। थानं। अंग। सदंती। प्रमांनं। तड़िता॥ ६॥ पत्ति। फहरंत्र। भादवा। झवक्कैं। मनों। गज्जै। बज्जै॥ ७॥ पट्टोर उधे॥ ५॥ घटं। बर। बटं। अगे। चलियं। अगिवानं। पुठि। षुरंसांन॥ ८॥ धरें। गोरी। थांनं २। कुटे। पट्ट। मांनो। न उट्टे सुरानें॥ ९॥ उपरें। सजी। कमठं। उथल। दभ्भी। बिंटे। गढ। कै। थांन थांनं। बडवानलानं॥ १०॥ थांन थांनं। गहैं। मुष। निसुरति। षांनं। ...हों॥ ११॥ भिरें। मोसूं। कहो। कौनं। तापनां। निच निठं। दिठि दिठं॥ १२॥ फुरमांन। निसुरत्त। नांय। शीशं। सडोरं। उपरं। भवरांन। भोरं॥ १३॥ हथी। आरबं। अराकी। रजकी। सष्यं। बांने॥ १४॥

निसुरति षां का अरब खाँ को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के बचन माने और हिन्दु धर्म्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ॥

कवित्त ॥ कह्यौ साहि जो बचन । सोइ तुम काज सुधार्‍यौ ।
तेइ बचन सति होइ । हिंदु ध्रम्मं न बिचार्‍यौ ॥
मेछ धर्‍यौ कुल क्रंम । जोगि ग्यानह जिम धारहि ॥
सेवक मत्त सुभाइ । देन आलम नाकारहि ॥
षुरसान षान सुरतान पति । दल बद्दल पावस मिलिग ॥
चत्तुरंग सज्जि चौरंग मिलि । सिद्ध चरित सिद्धन चलिग
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शाहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आएस । सूर चतुरंगन सज्जिय ॥
बीर बाल ससि वहि । मोह पूरन जिम भज्जिय ॥
करक निसा दिन मकर । सेन बढ्ढी तिम चंगिय ॥
मिलि अनंग आनंद । रंज आनंद सुजंगिय ॥
द्वादस सहस्र बारुन समह । दोइ लष्य सज्जे सुभर ॥
पारन सुअम्भ आरंभ दल । चल्यौ साह मधि दुप्पहर ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ ८ ॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था ॥

गाथा ॥ चित्तं मत्त गयंदं । पुंतारं नत्थि उत्तरयं ॥
त्यौं चित्तरेषय चित्तं । सुविद्दानं मंडियं नेहं ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ९ ॥

---

७ पाठान्तर-सोय । साज सुधारौ । होई । ध्रंम । बिचारौ । धरौ । कर्म्म । जोग । ग्यांनह । सुभाय । सुभाई । षुरसांन षांन । सजि ॥

८ पाठान्तर-आएश । चतुरंगति । सजिय । भंजय । निशा । बढी । चंगीय । जंगीय । समुंद । समद । दोय । लषु । सजे । दुपहर ॥

९ पाठान्तर-चितं । मत । पुतारं । नथि । उतरयं । चित्तं ।

सेना की शोभा का वर्णन ॥

छंद पद्धरी ॥ चढि [illegible] साहाब कूर। चल चले समुद सरिता सुपूर ॥
सुरतान कूच [illegible]प अप समान। सुर पंच बीर बर पत्ति षांन ॥ छं० ॥ १८ ॥
काली बला[illegible] [illegible]रन वितंड। सो अरिन फौज पारंत दंद
तत्तार षान खुरसान षांन। सो सामि भ्रंम राषन गुमांन ॥ छं० ॥ १९ ॥
मारूफ षांन मारू मरद्द। दल मंभि जानि नरसिंघ सद्द ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति बीर। आरब्ब मरद मझ्झै गभीर ॥ छं० ॥ २० ॥
महबूब षांन महबूब साह। दल मंझ अर्क उग्यौ उगाह ॥
वर वीर महन मभ्भी मरद्द। लज्जा कि अंग चंद सु सरद्द ॥ छं० ॥ २१ ॥
कंकर कराव मैदान भान। जादेत सेष सा भ्रंम षान ॥
पानी प्रवाह ढिग साह शूर। झिलि मिलिग [illegible] अंग[illegible] [illegible]र ॥ छं० ॥ २२ ॥
नीसान जोर बज्जे सु नद्द। भद्दव कि मास घन गरज सद्द ॥
चल्ल विरद्द वाने विवेक। जाने कि बन्न रति राज नेक ॥ छं० ॥ २३ ॥
गज सीस चौंर सेतह सुवाह। हरहार गंग कुट्टं प्रवाह ॥
चमकंत नाल उप्पम सु जोह। ससि बाल जानि घन घटा सोह ॥ छं० ॥ २४ ॥
सिप्पार तीस ते पढत मुष्य। साभ्रंम हथ्थ तसबी सुरष्य ॥
है परष परष साईं सुकीय। कुट्टंत अरम जनु किरन कीय ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १० ॥

शाह की सेना की प्रबलता देख कर अरब का अपना बल भंग होना कहना ॥

दूहा ॥ सुनि अवाज आरब मुषसु। बर उत्तर तिय मुंद ॥
बल भग्गौ इन भंति बर। ज्यौं तत्त तवे पर बंद ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ ११ ॥

१० पाठान्तर-साह। संपूर। सुरतांन। समांन। [illegible]षनं। पंति। षांन ॥ १८ ॥ बलाय। ततार षांन षुरसांन षांन। सांमि। ध्रम्म। गुमांन ॥ १९ ॥ मारूप षांन। मरद। मझि। जांनि। नरसीह। ततार षांन निसुरति। आरब। मभ्भैं ॥ २० ॥ षांन। मझ्झ। अगाह। मभ्भी। मरद। चंदं। सारद्द। सरद ॥ २१ ॥ मैदांन। [illegible]दांन। भांन। ध्रंम। षांन। पांनी ॥ २२ ॥ नीसांन। वज्जे सनद। भदव। गहर सद। हले [illegible]रद वांनें। जांने। बन। ऋतुराज ॥ २३ ॥ शीश। कुट्टं। उपम। जांनि ॥ २४ ॥ सिपार। [illegible]ष। हथ। रष। सांईं। अरस ॥ २५ ॥
११ पाठान्तर-आवाज। समुष। उतरिय। भगो। तये ॥

अरब ख़ां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेट में देना ॥

अरिल्ल ॥ आरब षान तन क्रन मानिय। ज्यौं सुक्रिया पिय आग्या जानिय ॥
लै फुरमान बंदि सिर धारिय। चित्ररेष दीनी लै भारिय॥
छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १२ ॥

चित्ररेषा वेश्या के रूप का वर्णन ॥

साटक ॥ बेस्या बंक्तित भूप रूप मनसा, श्रृंगार हारावली ॥
सोयं सूरति लच्छि अच्छित गुनं, बेली सु कामावली ॥
का बंनैं कवि उक्ति जुक्ति मनयं, त्रैलोक्य मं साधनं ॥
सोयं बाल तिरत्त उष्ट विद्रुमं, का मोद जोगेश्वरं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १३ ॥

साटक ॥ रूपं नहि कटाच्छ कुल तटयौ, भायं तरंगं बरं ॥
हावं भावति मीन भासित गुनं, सिद्धं मनं भंजनी ॥
सोयं जोग तरंग रूवति बरं, त्रीलोक्य ना ता समा।
सोयं साहि सहाव दीन ग्रहियं, आनंग क्रीड़ा रसं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १४ ॥

बिना युद्ध चित्ररेषा को लेकर गोरी का लौट आना ॥

दूहा ॥ अंग सुलच्छिन हेम तन। नगधरि सुंदरि सीस ॥
गोरी ग्रहि गोरी गयौ। विना जुद्ध बुझि रीस ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १५ ॥

चित्ररेषा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ॥

दूहा ॥ जिम जिम साह सु आदरय। तिम तिम बढ्ढिय पेम ॥
क्रम क्रम फल गुन बद्धरय। बेली नमैं सु तेम ॥ छं० ३१ ॥ रू० १६ ॥

---

१२ पाठान्तर-षान। क्रन। मानिय। सुक्रीया। जांनिय। फुरमांन। धारीय ॥
१३ पाठान्तर-सोयं। लछि। अछित। बेली। बरनै। युक्ति। मन। तिरत। जोगेसरं ॥
१४ पाठान्तर-नत। कंटाल्य। तटयो। मान। ग्रसित। भजनी। रूअति। त्रीकोन ता संमयं। त्रिलोक्य। नह। समां। साहाव। ग्रहीयं ॥
१५ पाठान्तर-लछिन। शीश। ग्रहि। युद्ध ॥
१६ पाठान्तर-आदरीय। बढिय। जिम २ फलगुन वाधइयं॥

चित्ररेषा के सुलतान को वश करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ बसि कीनौ सुरतान । चंग जिम भ्रमै डोरि कर ॥
　जिम नावी भ्रात लाइ । बचन उद्योत बाल सुर ॥
　ज्यों बसि जीवन मंन । प्रात बसि जेम क्रंम्म गुर ॥
　ज्यों बसि नाद कुरंग । बास बसि जेम मधुक्कर ॥
　महिला सु मुक्कि सब बस्सि भय । महिला महिल सुमत्ति बसिं ॥
　एकंग एक अंदर महल । रचै साहि सुरतान रसि ॥

छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १७ ॥

चित्ररेषा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना ॥

दूहा ॥ पंषी प्रेम प्रवेन जिम । सुमन मनोहर मिष्ट ॥
　सुनत कथा संभ्भल दूह । अनंदियं मन दृष्ट ॥

छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ १८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके चित्ररेषा वर्णनं नाम एकादसो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ११ ॥
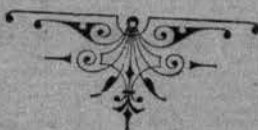
१७ पाठान्तर—कोनौं । सुरतांन । भ्रमै । लोई । मंत । क्रम । नद । बशि । मधुकर । सुमति । बसि । मति । रहैं । सुरतांन । रस ॥

१८ पाठान्तर—यह । आनंदीय ॥

* यह दोहा Caulfield, Ms. में नहीं है, परन्तु वह हमारी सं० १६४० और सं० १८५९ की पुस्तकों में है ॥